मई 2025

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

हर एक युग में हमेशा दो पीढ़ी के बीच ऐसा भेद पड़ जाता है। इस तरह (जनरेशन के) ये चक्र घूमते रहते हैं, काल अनुसार सब होता रहता है, उसमें किसी का भी दोष नहीं है। यह नयी जनरेशन एकदम हेल्दी माइन्ड वाली हुई है! हेल्दी माइन्ड की जनरेशन होती है तब वर्ल्ड का कल्याण करती है! इन्हें मार्गदर्शन देने वाला चाहिए।

अडालज : त्रिमंदिर संकुल में भक्ति : ता. 14 मार्च 2025

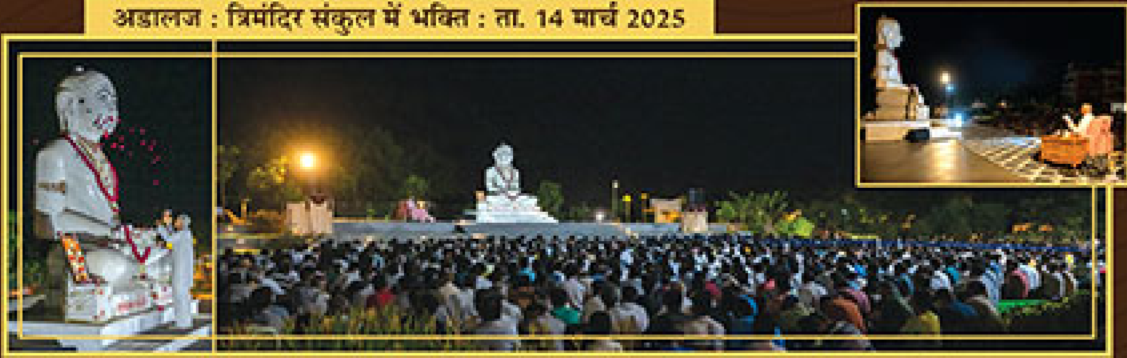

अडालज : पूज्य नीरू माँ की 19वीं पुण्यतिथि : ता. 19 मार्च 2025

अडालज : SMHT Day : ता. 21 मार्च 2025

वर्ष : 20 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 235
मई 2025
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2025
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol,
Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

काल अनुसार बदले जनरेशन, उसमें दोष किसका ?

संपादकीय

सामान्य दृष्टि से जनरेशन गैप यानी पुरानी और नयी पीढ़ी के बीच उत्पन्न होती हुई भिन्नताएँ। जिनमें हर एक का पालन-पोषण, संस्कृति, विचारधारा और मान्यता इत्यादि से उत्पन्न होने वाले मतभेदों को 'जनरेशन गैप' कहते हैं। लोगों को लगता है कि ये अंग्रेज़ आए तब से हिन्दुस्तान की नयी पीढ़ी बिगड़ गई, जबकि परम पूज्य दादाश्री की विचारधारा अनोखी है। उनके अनुसार अब इस काल में भारत देश डेवेलप हुआ है, अभी की प्रजा में सुधार होता दिखाई दे रहा है। जबकि पुराने जमाने की प्रजा ने निचली जात-पात, विधवा स्त्रियों पर भयंकर अत्याचार, तिरस्कार, आग्रह किए थे, इसलिए अबव नॉर्मल हो गए थे। अबव नॉर्मल इज़ द पॉइज़न एन्ड बिलो नॉर्मल इज़ द पॉइज़न, जो अंग्रेजों के आने से यहाँ के लोग नॉर्मेलिटी में आ गए।

पुरानी जनरेशन तिरस्कार, मान की गांठ लेकर आई थी जबकि आज की नयी जनरेशन मोह की गांठ लेकर आई है। मनुष्य का स्वभाव कैसा है कि बचपन में खुद ने देखा हो वैसा ही इन बच्चों को भी करना चाहिए, ऐसा मानता है। अरे! समय बदल गया है! समय अनुसार यह जगत् बदलता ही रहता है और उसके बाद फिर से वापस उसी जगह पर आता है। इसीलिए नया-नया लगता है। इसीलिए जी पाते हैं, वर्ना जी नहीं पाते। क्या यह जगत् उल्टा या सीधा हो रहा है? इस जगत् को बदलने की किसी के पास सत्ता है? कुदरत बैलेन्स करने के लिए पिछला पुराना सब बदल देती है और नया प्रवाह लाती है।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि उसके बावजूद हमारी पुरानी पीढ़ी विषय की बाबत में बहुत साफ थी। वे पुराने बुज़ुर्ग बुद्धि में नहीं पड़े थे, जबकि ये युवा सिर्फ बुद्धि में ही पड़े हुए हैं, इसलिए युवाओं के साथ मेल नहीं बैठता। बुद्धि स्थिर होने नहीं देती जबकि हार्ट स्थिर होने देता है। अध्यात्म मार्ग, वह बुद्धि वालों की खोज नहीं है, हृदयवालों की खोज है। इसलिए हमारे समय की प्रजा में बिल्कुल ऐसा नहीं था। कुछ ऐसे, अच्छें, ऊँची सूझ वाले पुराने लोग थे, लेकिन वैसे आज देखने को नहीं मिलते।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि इस काल की जनरेशन को मैं 'हेल्दी माइन्ड वाली' कहता हूँ। पुराने रोग नहीं हैं इसलिए जैसा गढ़ना हो वैसा गढ़ा जा सकता है। कलियुग में जब पुरानी-नयी पीढ़ी के बीच भेद पड़ जाता है उस समय जो मूर्ख है, वह पकड़ कर रखता है। मैं तो पहले से ही मॉडर्न हो गया था। संयोग अनुसार नेचर निरंतर गोल-गोल घूमती रहती है, ये युग, वे भी राउन्ड्स हैं। पुराने को नया करते हैं और नये को फिर पुराना करते हैं। इस तरह जनरेशन के चक्कर काल अनुसार घूमते रहते हैं, उसमें किसी जनरेशन का दोष नहीं है। मैं तो हर एक के लिए पॉज़िटिव करना चाहता हूँ। हम सौ नेगेटिव में से एक पॉज़िटिव ढूँढकर समय के प्रवाह में आगे बढ़कर पुरानी-नयी पीढ़ी के बीच एडजस्ट होकर आनंद में रहें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

काल अनुसार बदले जनरेशन, उसमें दोष किसका?

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

तिरस्कार वृत्ति ने न्योता पतन को

प्रश्नकर्ता : मेरी माता को देखता हूँ और मेरी पोती को देखता हूँ तो दोनों में मुझे इतना अधिक फर्क लगता है कि पूछो मत! अभी की प्रजा बिगड़ी हुई लगती है।

दादाश्री : और आपके दादा के समय में, दादा आपके लिए क्या कहते थे?

प्रश्नकर्ता : अभी मैंने जो कहा, वही कहते थे।

दादाश्री : हम बाज़ार से सुंदर, अच्छी लौकी लेकर आए हों और सब्ज़ी तो बनानी ही है, इसलिए काटनी तो पड़ेगी ही न? और जब काटें तब कहेंगे कि, 'मत काटना, उसका सुंदर रूप बिगड़ जाएगा' लेकिन यदि सब्ज़ी खानी हो तो उसके रूप को छोड़ना ही पड़ेगा। भारत यदि डेवेलप हुआ है, तो किसी काल में नहीं हुआ था, ऐसा डेवेलप होना शुरू हुआ है। ये सब तो बिल्कुल अनाचारी और दुराचारी ही थे। सौ में से पाँच या दो प्रतिशत लोग ही अच्छे निकलते थे। बाकी, सब वहम में और सारे दिन क्लेश, कलह और तिरस्कार में ही बिताते थे। पूरा दिन तिरस्कार करते थे। निचले वर्णों के प्रति तिरस्कार रखते थे, दूसरों के प्रति तिरस्कार रखते थे, खुद के भाई का यदि कभी ज़रा भी आचार कम दिखाई देता था न तो उसके प्रति भी तिरस्कार रखते थे, शिष्य का आचार थोड़ा कम दिखाई देता था तो उसके प्रति भी तिरस्कार रखते थे, जहाँ-तहाँ तिरस्कार ही करते थे, बहुत बिगड़ गया था यह देश।

पुराने जमाने की प्रजा ने निचले वर्ण पर भयंकर अत्याचार किए थे। बहुत खराब संस्कार और कितना तिरस्कार, तिरस्कार, निचले वर्ण पर, बाकी सभी पर तिरस्कार, तिरस्कार, तिरस्कार और यह कुत्ता घर में घुस जाता है न, उसका हर्ज़ नहीं है, परंतु ये निचले वर्ण वाले गाँव में घुस गए, उसमें तुझे अड़चन हो गई! तब कहते हैं, 'पीछे झाड़ू बाँधो, उसके पैरों के निशान बन जाते हैं न'! तो वे भाई चलते, उनके पीछे झाड़ू चलती थी उससे उनके पैरों के निशान मिट जाते थे और आगे दिया बाँधो, कहते थे। तो यहाँ (मुँह) पर दिया बाँधते थे, थूंकना हो तो नीचे थूंक नहीं सकते थे। तब भाई, बिल्लियाँ आपके घर में घूमती हैं, आपके रसोईघर में घूमती हैं तब भी चला लेते हो और इसे नहीं चलाते? बिल्लियों ने दही में मुँह डाला हों न, तब भी भाई दही खा लेते हैं। जानते हैं कि इसे बिल्ली ने चखा है। किस तरह के लोग हैं ये सभी! आपका न्याय किस तरह का है? ऐसा तो 'आतंक' मचाया! मेरे जैसे हाज़िर जवाब होते न, तो सिर फोड़ डाले वैसा जवाब देते कि इन कुत्तों को थूकने की और दूसरी सब छूट, उनके पैरों के निशान चलते हैं और इन मनुष्यों के नहीं चलेंगे? ऐसे कैसे मेन्टल हो गए हो? यह तो एक्सेस (ज़्यादा) हो गया था।

दुराचार इतना अधिक बढ़ गया था कि अत्यधिक दुराचार हो गया था। उसके बजाय तो आज का यह दुराचार अच्छा! यह खुला दुराचार कहलाता है। पूरा देश ही ऐसा हो गया था और

उसके कारण ये कष्ट पड़े हैं, देश को भयंकर कष्ट पड़े हैं।

अभी की प्रजा में जो सुधार होता हुआ दिखाई देता है, उसके कारण पहले के लोगों जैसा बिगाड़ कम होने लगा है। उनमें जो जंगलीपन था वह चला गया और दूसरा जंगलीपन उत्पन्न हुआ। पहले के लोगों को यह पसंद नहीं आया। पुराने जमाने में तो निरा तिरस्कार ही था। हिन्दुस्तान की दशा बिल्कुल बिगड़ गई थी, जिसे धर्मनिष्ठ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि बगैर सोची-समझी हुई बात थी। आटा अच्छी तरह से गूँधा हुआ था ही नहीं। यों ही अधकचरे आटे के लड्डू बना दिए थे! बस यों ही गूँधे बगैर, अभी ये गूँधे जा (सँवर) रहे हैं। आज के बच्चों में 'ऐसा' दिखाई देता है लेकिन वे सँवर रहे (गढ़े जा रहे) हैं। हमेशा ही जब सही देखभाल होती है न, तब ऐसा होता है।

आगे से चली आई

पुरानी पीढ़ी वाले बच्चे जो कि किच-किच करते हों तो मैं उनसे पूछता हूँ कि आप छोटे थे, तब आपके पिता आपसे कुछ कहते थे क्या? तब कहते हैं, 'पिता भी किच-किच करते थे।' उनके पिता से पूछें कि 'आप छोटे थे तब?' तब कहते हैं, 'हमारे पिता भी किच-किच करते थे'। यानी यह 'आगे से चली आई है'।

हम जब छोटे थे, तब सभी ओल्ड (बूढें) लोग क्या कहते थे, 'अरे बिगड़ गए हैं, बिगड़ गए हैं।' फिर मैं उनसे पूछता कि, 'आपको आपके दादा क्या कहते थे?' यह तो जंगलीपन है, ऐसा अनादि काल से जंगलीपन चला आ रहा है। कहते हैं कि, 'हमने किया, वैसा करो।' मैं जिस कुएँ में पडूँ उसी कुएँ में तुम पड़ो। अरे, अब उस कुएँ में पानी नहीं है, बड़े-बड़े पत्थर हैं, साँप हैं। अब अगर पडूँगा तो मर जाऊँगा। पहले तो पानी था, अब उसी कुएँ में पड़ो, ऐसा कहते हैं। वैष्णव के या जैन के या फँला-फँला कुएँ में ही पड़ो। अब कहाँ तक इस कुएँ में पड़ते रहें? कहेंगे, 'हमने किया, वह करो!' अरे, आपके चेहरे पर नूर नहीं दिखता। पूरे दिन कषाय, कषाय और कषाय ही करते रहते हैं और खाना खाने जाएँ न, तो ऐसा ही समझते थे कि आज किसी के यहाँ हमने मुफ्त में खाया है, आज मुफ्त का मिला है। भारत के डेवेलप्ड लोग जब किसी के यहाँ खाना खाने जाएँ तो उन्हें ज्ञान हाज़िर हो जाता है कि 'आज फ्री भोजन करना है! तो डटकर अच्छी तरह खाना।' ऐसे हैं अपने सब डेवेलप्ड बूढ़े! ये सभी लोग डेवेलप्ड थे, उनमें से कोई-कोई तो अगर खाने पर बुलाया हो न तो डेढ़-दो दिन पहले से तो भूखे रहते थे, घर का बिगड़े नहीं न इसलिए, और खाने बैठते तो इतना सारा खा लेते थे कि फिर दो दिन तक खाना नहीं पड़े। यानी ऐसा ही समझते कि मैं मुफ्त का खा रहा हूँ, फ्री ऑफ कॉस्ट! मतलब कि नीयत कितनी चोर है! और उसी के दुःख भोगे हैं।

पुरानी प्रथा में देश की दशा, दोष किसका?

कोई स्त्री विधवा हो गई तो उसकी तरफ तिरस्कार, तिरस्कार और तिरस्कार। विधवा का तो जंगली लोग भी तिरस्कार नहीं करते हैं कि बेचारी विधवा हो गई है इसलिए उसके आसपास के सारे अवलंबन टूट गए हैं। अवलंबन टूट गए हैं, इसलिए वह बेचारी हर तरह से दुःखी है। मूलतः पति के आधार पर सुख था वह भी चला गया है, तो उसके ऊपर सभी को करुणा रखनी चाहिए। लेकिन इन लोगों ने उस पर भी भयंकर तिरस्कार बरसाया। दूसरा, वर्ल्ड में कहीं भी नहीं हो, वैसा तिरस्कार निचले वर्ण वालों के प्रति किया। और सभी जगहों पर भी तिरस्कार, सगा भाई हो तो उस पर भी तिरस्कार - भयंकर

तिरस्कार किया। अब, उसे सुधरा हुआ देश कहा ही कैसे जाए?

विधवाओं को जिन्होंने परेशान किया था, आज उन सभी के घर पर बेटियाँ पैदा हुई और उन बेटियों ने डाइवोर्स लेकर जो तबाही भरा तूफान मचा दिया है, उन्होंने अपने बाप को मार लगाई है, उन विधवाओं ने ही इन सब को परेशान किया है! मेरे यहाँ आकर क्यों परेशान नहीं करतीं? मैं था ही नहीं वैसा।

विधवा स्त्री पर तिरस्कार आपने देखा था? आपको कपकपी नहीं छूटती थी? बहुत ही जबरदस्त तिरस्कार और मैं तो फिर विरोधी था, कड़क। कड़क और विरोधी। मुझे तो पुसाता नहीं था यह तिरस्कार! बहुत तिरस्कार! विधवा वह तो गंगास्वरूप होती है, उसका नाम कैसे लिया जाए? और फिर कहते क्या हैं? गंगास्वरूप। और कोई विधवा सामने मिल जाए तो कहते हैं कि, 'मुझे अपशकुन हो गए, अच्छा काम करने जा रहा था और मुझे अपशकुन हो गए!' ऐसे जंगली! ऐसे जंगली लोगों को तो फाँसी पर चढ़ा देना चाहिए। लेकिन भगवान ने क्या कहा है कि 'आप फांसी पर मत चढ़ाना, यह अधिकार आपके हाथ में मत लेना।' नैचुरल (कुदरती) नियम ही है। नेचर (कुदरत) कहती है कि, 'ऐसों का तो हम हिसाब कर ही लेते हैं, हमारा नियम ही है। वह अधिकार आप मत लेना।' और आज बहुत कष्ट उठा रहे हैं! ये सभी जो कष्ट उठा रहे हैं, वे खुद के ही कष्ट उठा रहे हैं। और ये तो डेवेलप हो रहे हैं, अन्डर डेवेलप्ड नहीं हैं। फिर भी हमें बात आचार की करनी चाहिए कि, 'बहन, उम्र हो गई है, यह जगत् फँसाव वाला है। यदि आपको सुख ही चाहिए तो सोच-समझकर कदम बढ़ाना और कदम रखो तो हमें पूछ लेना। पूछोगी तो मैं आपत्ति नहीं उठाऊँगा। पूछना, सलाह के तौर पर।' इस वकील की सलाह लेते हैं तो क्या बाप वकील से भी गया-बीता है? वकील के बजाय तो बाप पर अधिक विश्वास होता है न?

हिन्दुस्तान सुधरा हुआ नहीं था, मन में से निकाल देने जैसा था, पॉइज़नस था सारा, ज़हरीला था सारा। इस देश की दशा तो देखो कैसी हो गई है! लेकिन उसमें किसी का दोष नहीं था। कोई इंसान दोषित नहीं होता। एविडेन्स (प्रमाण) खड़े हो जाते हैं, उसमें सरकमस्टेन्सेस (संयोगों) खड़े हो जाते हैं। अब यह बदलाव शुरू हो गया है।

निंदा से अपना देश खत्म

अपना यह देश पैसे वाला कब बनेगा? कब लक्ष्मीवान और सुखी होगा? जब निंदा और तिरस्कार बंद हो जाएँगे तब। ये दोनों बंद हुए कि देश में बेहिसाब पैसे और लक्ष्मी होंगे।

इस हिन्दुस्तान में निंदा और तिरस्कार कम होने लगे हैं और लोभ बढ़ा है। सुख का लोभ लगा है, इसलिए हिन्दुस्तान अच्छा बन जाएगा। इस लक्षण पर से मैं समझ जाता हूँ। भले ही ज़रा मोह बढ़ेगा, लेकिन दूसरा सब निंदा, तिरस्कार वगैरह कम होंगे न!

यह कुदरत हमारी 'हेल्प' (मदद) में है, यह बात पक्की है। अत: यह बात बहुत समझने जैसी है। लोग दु:खी क्यों थे, वह मैंने ढूँढ निकाला, और अभी गाँव वाले किसलिए दु:खी हैं? अभी तक वे निंदा के ही धंधे में पड़े हुए हैं। आज के ये जीव (लोग) तो और कुछ नहीं हो तो रेडियो-टी.वी. की मस्ती में ही रहते हैं! ये लोग किसी की निंदा में नहीं पड़ते। ये तो टी.वी. देखते हैं, और भी कुछ देखते हैं, फलाना देखते हैं, वह भी खुद की आँखें बिगाड़कर, लोगों की आँखें थोड़े ही बिगाड़ते हैं? खुद की ही ज़िम्मेदारी है न! अपना पूरा देश निंदा से, भयंकर निंदा से खत्म

हो गया था। शास्त्रकारों ने नियम बताया है कि टीका अवश्य करना। टीका-टिप्पणी नहीं करोगे तो फिर लोग सुधरेंगे नहीं। उस टीका-टिप्पणी का 'इग्ज़ैगरेशन' (अतिशयोक्ति) हो गया और उससे फिर निंदा आ गई! जो विटामिन था, उसी का नाश कर दिया!

पहले तो क्षत्रिय खून खौल उठता था

मेरी कम उम्र में मेरा द्वेष देखा होता तो आप ऐसा कहते, कि ये व्यक्ति तो कभी ज्ञानी बन ही नहीं सकते, ऐसा द्वेष था! मेरा ज़रा अपमान किया हो तो समझो उसकी शामत आ जाती। रावजीभाई तो कल कहते थे न, 'आपका धार्युं (इच्छानुसार, मनमानी) न हो तो मार डालते किसी को!'

प्रश्नकर्ता : 'जिद्दी हैं', ऐसा कहते थे।

दादाश्री : 'अब, पंद्रह सालों से आप संत हो गए हो', ऐसा वे स्वीकार करते थे। यानी पहले बहुत द्वेष थे मुझमें। और मुझे तो, रात को अपमान किया हो न, तो सुबह मैं ढूँढता रहता था, कहाँ से आएगा और कहाँ रहकर पकड़ें! उसे उड़ा देने का मन होता था। वह ब्लड (खून) जैसे पूरा खौल उठता था। यदि कोई ज़रा सा ऐसा करता था न, तो ब्लड गर्म हो जाता था। यह अब गर्म नहीं होता। एक-दो (थप्पड़) मारे न, फिर भी गर्म नहीं होता। उन दिनों तो ब्लड गर्म हो जाता था, एक ज़रा सा अपमान किया हो तब भी। मूल क्षत्रिय स्वभाव जाता नहीं न! उड़ा दूँ, ऐसा द्वेष! भयंकर द्वेष! जबकि इनमें (नयी पीढ़ी में) द्वेष न देखकर मुझे आश्चर्य... आश्चर्य हुआ, कि ये किस तरह के हैं! डेवेलप्ड हैं न?

प्रश्नकर्ता : डेवेलप्ड।

दादाश्री : और इनमें द्वेष न देखकर, मैं प्रभावित हो गया, कि अरे ये जन्म लेते ही, सिखाए बिना द्वेष रहित हुए कैसे? ऐसी 'नोबिलिटी' (उदारता) कहाँ से हो सकती है?

विलय होंगी गांठें, सत्संग से ही

यह जनरेशन (पीढ़ी) बहुत गांठें नहीं लाई हैं। मोह की ही गांठें हैं। लोभ की या ऐसी कोई गांठ नहीं है। आप अपने बच्चों को देखते होंगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अन्य गांठें नहीं हैं न? आज की यह पूरी जनरेशन गांठों वाली नहीं हैं। हमारी पिछली जनरेशन बहुत गांठों वाली थी! लोभ की भारी गांठें! इस वजह से चोरी करते थे, झूठ बोलते थे, धूर्तता करते थे, सभी कुछ करते थे। वैसी चोरी नहीं, पकड़ में आ जाए, ऐसी चोरी नहीं। मानसिक, बुद्धि से ट्रिक्स (चालाकियाँ) लगाते थे। उस चोरी की बजाय ऐसी चोरी गलत कही जाएगी। बस पकड़ा नहीं गया, इतना ही।

सत्संग में रहने से ही गांठें विलय होंगी। वर्ना जब तक सत्संग में नहीं रहेंगे तब तक गांठों का पता नहीं चलेगा। सत्संग में रहने से वह सब निर्मल होता हुआ नज़र आएगा। आप अलग रहे न! बहुत दूर रहकर देखो आराम से। तब आपको सारे दोष दिखाई देंगे। उसमें तो गांठों में रहकर देखते हैं, तो दोष दिखाई नहीं देते। इसीलिए कृपालुदेव ने कहा है, 'दीठा नहीं निज दोष तो तरिए कौन उपाय?'

अबव नॉर्मल-बिलो नॉर्मल इज़ द पॉइज़न

अब यह (हिन्दुस्तान) उच्च प्रकार का हो रहा है, ग़ज़ब के स्थान पर जा रहा है वर्ल्ड में आज! हिन्दुस्तान वर्ल्ड में ग़ज़ब के स्थान पर पहुँच गया है! वर्ना क्या मोक्ष की बात कर सकते थे? मोक्ष तो लिखने के लिए भी नहीं

था, किसी को मोक्ष (शब्द) लिखने का भी अधिकार नहीं था। ये सभी (उपदेशक) थे न, वे ओवरवाइज़ (अति सयाने) हो गए थे, उनमें दो-पाँच एक्सेप्शनल (अपवाद) केस हो सकते हैं शायद! बाकी तो, ओवरवाइज़ यानी चुनाई के काम में भी न आए वैसी ईंट, डिफॉर्म (विकृत) हो चुकी हो उस *खेंगार* ईंट (ज़्यादा पकी हुई ईंट) जैसे! जो ओवरवाइज़ हैं उन्हें *खेंगार* कहते हैं। जो ईंट कच्ची हो, वह अंडरवाइज़।

भगवान के वहाँ तो सयानेपन की ही ज़रूरत है, जबकि यह सारा ओवरवाइज़ हो गया था और जानवर से भी अधिक खराब आचार हो गए थे। क्योंकि जानवरों में दुराग्रह नहीं होता, कदाग्रह नहीं होता, हठाग्रह नहीं होता। अतः मनुष्य में वे तो होने ही नहीं चाहिए और यदि हों तो कुछ हद तक रहें, तब तक मनुष्यपन है, क्योंकि डेवेलप्ड हैं। यानी कि जानवरों की तुलना में इनमें विशेष आग्रह होता है, वह कुछ हद तक रहे तब तक ठीक है, नहीं तो फिर जानवरों से भी अधिक बुरा कहलाएगा। इसे मनुष्यपन कैसे कहोगे? गलत आग्रह रखना, गलत दुराग्रह, गलत कदाग्रह, खुद के ही विचारों से धर्म को मानना और मूल्यांकन करना। धर्म तो कैसा होना चाहिए? कि छोटे बालक के पास से भी जानने का प्रयत्न करना चाहिए। जानवरों से भी यह जानने का प्रयत्न होना चाहिए कि इनमें कैसे-कैसे गुण हैं!

इस कुत्ते को एक ही दिन पूड़ी दी हो, तो तीन दिन तक वह हमें जब भी देखे, तब दुम हिलाता रहता है। उसमें हेतु लालच का है कि फिर से दें तो अच्छा - लेकिन वह उपकार तो नहीं भूलता है न! वह उपकार को लक्ष्य में रखकर लालच रखता है। और मनुष्य? चाहे जो हो लेकिन आज तो यह भारत डेवेलप हुआ है, नहीं तो क्या मोक्ष की तो बात सुनाई देती? अरे, समकित का ही ठिकाना नहीं था न! भगवान महावीर के जाने के बाद आज दो-दो हज़ार सालों से ठिकाना नहीं था, और उनसे पहले भी नहीं था। भगवान का जन्म हुआ तब 250 साल में दो बार लाइट कौंध गई, पार्श्वनाथ और महावीर - दो। उस समय बस कुछ ही लोगों का काम हो पाया था, अन्य किसी को लाभ-वाभ नहीं मिला। भगवान का प्रभाव तोड़ने के लिए लोगों ने बहुत उपाय किए थे। जहाँ पर भगवान चलते वहाँ पर इस तरह खड़े काँटें रास्ते में बिखेरे। वे कीकर (बबूल) के काँटें ऐसे खड़े रखे होते थे लेकिन जब भगवान उस पर चलते तब काँटें ऐसे टेढ़े हो जाते थे। ऐसा प्रत्यक्ष देखते थे फिर भी हिन्दुस्तान के दूसरे धर्म (संप्रदाय) के लोगों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। कहते थे, 'यह तो जादू है, यह विद्या है' ऐसा स्वीकार कर लिया। लेकिन सत्य का स्वीकार नहीं किया। ऐसे ग़ज़ब के साइन्टिस्ट, उन्हें स्वीकार नहीं किया! बहुत ही जंगलीपन। प्रपंच! प्रपंच! प्रपंच! धर्म में ही व्यापार किए! व्यापार कहाँ शुरू कर दिए थे? धर्म के अंदर ही व्यापार! इसलिए ऐसा जो पुराना डेवेलपमेन्ट (विचारधारा) था, वह निकाल देने जैसा था। वह बिल्कुल खत्म हो चुका स्ट्रक्चर (संरचना) है, उसे गिर जाने दो, नया खड़ा हो रहा है! वर्ना मोक्ष की बात तो सुनने को ही नहीं मिलती!

जैसे-जैसे यह कल्चर्ड होता (सुधरता) जाएगा, वैसे-वैसे वे पुस्तकें टाँड़ पर चढ़ा देंगे, रद्दी में चली जाएँगी क्योंकि जब तक डेवेलप नहीं होते, तब तक उनकी कीमत है। गीता को समझने वाले और वेदांत को समझने वाले निकलेंगे अब! अब डेवेलप हो रहे हैं, उसमें निमित्त बने हैं अंग्रेज़। इस अच्छी बात में अंग्रेज़ निमित्त बने हैं।

प्रश्नकर्ता : उन्होंने ज्ञान का अनावरण किया?

दादाश्री : नहीं, ज्ञान का नहीं। लेकिन लोग

जो एब्नॉर्मल (असामान्य) हो गए थे उसमें बेकिंग (वापस ले आए) करवाया, मतलब नॉर्मेलिटी (सामान्य) की तरफ लाए। अपने लोगों ने क्या कहा कि, 'ये लोग अपने धर्म और अपने आचार नष्ट करने आए हैं'। यानी उन्होंने इतना नष्ट किया, तभी तो ये नॉर्मेलिटी पर आ रहे हैं। अपने लोग क्या शोर मचा रहे थे कि ये लोग धर्म और आचार सब तोड़ डालेंगे और अपना सब खत्म कर डालेंगे! नहीं, उन्होंने उतना कम कर दिया। 85 डिग्री तक एब्नॉर्मल हो गया था और हमें नॉर्मेलिटी के लिए 50 डिग्री की ज़रूरत थी, तब उन लोगों ने आकर 30-35 डिग्री निकलवा दी, जड़ बना दिया। जड़ अर्थात् दारू पीना सिखा दिया, माँसाहार करना.., कपड़े-लत्ते सभी कुछ मोहनीय बना दिया, इसलिए 'पहले वाले' दुर्गुण चले गए!

क्या महावीर ऐसा डिप्रेशन करने को कह गए हैं? वीतराग क्या कहकर गए हैं? अबव नॉर्मल इज़ द पॉइज़न और बिलो नॉर्मल इज़ द पॉइज़न। हर बात में अबव नॉर्मल हो गए थे। निरा द्वेष, द्वेष और द्वेष और दुराचार का भी कोई अंत नहीं था। जो तिरस्कार के दुर्गुण थे न, वे खत्म हो गए, फ्रेक्चर हो गए। यह सब से अच्छा काम किया उन लोगों ने।

अंग्रेज़ों का एक उपकार

अंग्रेज आए और उनकी भाषा लाए, वह अपने परमाणुओं के साथ आती है। हर एक भाषा हमेशा खुद के परमाणु लेकर आती है। इसलिए उनके जो गुण थे न, साहजिक गुण, टाइम-वाइम सब एक्ज़ेक्ट होना चाहिए, वे साहजिक गुण नए सिरे से शुरू हो गए। ये तो सब स्वार्थी हो चुके थे। सिर्फ खुद के घर की ही पड़ी थी, बाकी सब लोगों के घर जल रहे हों तो सोते रहते थे मज़े से। प्रपंची, स्वार्थी! सभी तरह से तिरस्कार वाले, यूज़लेस (निकम्मे) हो गए थे।

ब्राह्मण कहते थे कि, 'भगवान का मुख हम हैं और ये क्षत्रिय छाती तक हैं और ये सारे वैश्य और ये सारे शूद्र हैं, वे निम्न हैं'! दुरुपयोग, सिर्फ दुरुपयोग ही किया! जिसका सदुपयोग करना था, उसी का दुरुपयोग किया। हम ब्राह्मण मतलब हम मुखारविंद, इसलिए हम जो कुछ भी कहें उस पर आपको आपत्ति नहीं उठानी है। तो उन्होंने उस पावर, वीटो पावर का उपयोग किया जिसके कारण वे भयंकर यातनाओं में फँस गए। इस प्रजा का तो जो होना होगा वह होगा, लेकिन उस वीटो का उपयोग किया, उस वजह से आज उनके पैरों में चप्पल तक नहीं मिलते! उनकी वैल्यू (कीमत) भी चली गई और चप्पल भी चले गए! दोनों साथ में चले गए! दुराचारों के कारण उनकी दशा तो देखो!

लालची है, उसके कारण मार खा रहा है यह जगत्। क्या लालच होना चाहिए मनुष्य को? लालच दीनता करवाता है और दीनता पैठी कि मनुष्यपन गया।

बेटियों का जन्म होते ही उसे 'दूध पीती' कर देते थे, मार डालते थे। राजपूत प्रजा में कैसा था? बेटी का विवाह करते समय दहेज देना पड़ता था, वह अच्छा नहीं लगता था और मूलतः पढ़े-लिखे नहीं थे, अनपढ़ थे। स्त्रियाँ भी अनपढ़ और पुरुष भी अनपढ़ और अपने आप को न जाने क्या समझते थे? इन्होंने तो दूसरों पर बहुत अत्याचार किए।

गाँव का ठाकुर हो और उसका चचेरा भाई हो तो वह घोड़े पर सवार होकर नहीं चल सकता था, उसे उतरकर चलते हुए गाँव में जाना पड़ता था! घोड़ा और वह दोनों साथ में जाएँ तो उसमें तेरा क्या जाता था? ऐसा तो कौन सा तुम्हारा भारी अहंकार घायल हुआ? यदि घोड़े पर जाए तो मारा-मारी और खून-खराबे तक पहुँच जाते थे!

इन्हें आर्यपुत्र कैसे कहा जाए? मिलावटी सोना और असली सोना दो होते हैं। उसमें, मिलावटी सोने में यदि सोने के गुण नहीं हों तो उसकी क्या कीमत? यह तो एक हिन्दुस्तानी में तो अनंत शक्तियाँ हैं, लेकिन सभी व्यर्थ ही नष्ट हो रही हैं। वह तो 'ज्ञानी पुरुष' से मिले तो शक्ति सीधी राह पर मुड़े और काम में आए। यह शक्ति कैसे व्यर्थ की? सिर्फ मेन्टेनेन्स के लिए अथाग शक्तियाँ व्यर्थ नष्ट कीं! और वह भी कलुषित भाव से ज़बरदस्त शक्तियाँ व्यर्थ नष्ट की! और यह भाई आई.ए.एस. का कर रहे हैं तो मैं भी निश्चय करता हूँ कि मुझे आई.ए.एस. होना है, ऐसे नकल कर-करके शक्तियाँ व्यर्थ नष्ट कीं। ऐसे नकल करने से तो भीतर की जो *सिलक* (जमा पूजी) थी, वह भी चली गई। हिन्दुस्तान के लोगों को तो, कोई असल लिखकर लाए न, तो हमें उसकी नकल नहीं करनी चाहिए। हम लोगों को नकल नहीं करनी चाहिए, बल्कि यह तो ऐसा होना चाहिए कि फॉरेन वाले (विदेशी) अपनी नकल कर जाएँ। लेकिन यह तो फॉरेन वालों ने यहाँ थोड़े हिप्पी भेजे तो यहाँ के लोगों ने उनकी नकल कर ली! फिर भी उससे हिन्दुस्तान का कुछ बिगड़ने वाला नहीं है, सुधरने वाला ही है।

ये जो मोही लड़कियाँ हैं न आज की, तो उन्हें देखकर लोगों को ऐसा लगता है कि ये लड़कियाँ मोही हैं, मूर्छित हैं, लेकिन उनकी कोख से बच्चे अच्छे पैदा होने वाले हैं।

प्रश्नकर्ता : उसका क्या कारण है, दादा?

दादाश्री : वह तिरस्कार वाला भाग चला गया न, डाउन हो गया है न, इसलिए अब तिरस्कार भाग उत्पन्न नहीं होगा। तिरस्कार गया कि नॉर्मल में आ गए। सुधरे हुए तो थे ही। लेकिन तिरस्कार के कारण लोग बिल्कुल खत्म हो गए थे। यूज़लेस हो गए थे। तिरस्कार गया कि अपनी नॉर्मेलिटी आ गई, ऑल राइट (ठीक) हो गए।

बुद्धि का उपयोग इन लोगों ने तिरस्कार और प्रपंच करने में ही किया। बुद्धि का दुरुपयोग किया, ज्ञान तो था नहीं। सिर्फ बुद्धि थी, उस बुद्धि का दुरुपयोग किया। बुद्धि क्यों बढ़ी? क्योंकि महावीर ब्रेन टॉनिक पिया था और कृष्ण ब्रेन टॉनिक पिया था। जीवजंतुओं को नहीं मारे और अन्य किसी को नहीं मारे तो फिर बुद्धि बढ़ जाती है। फिर जीवजंतुओं को एक ओर रखकर मनुष्यों पर अटैक (हमला) करने लगे!

अब हिन्दुस्तान तो बहुत अच्छी दशा की ओर जा रहा है। यह संस्कृति का प्रलयकाल है। कौन सी संस्कृति? आदर्श संस्कृति? ना, विकृत संस्कृति का प्रलयकाल है। अपनी संस्कृति में संस्कृत भाषा थी, वह यदि बहुत लो हो जाए, नीचे उतर जाए, तो प्राकृत तक चला सकते हैं, लेकिन विकृत हो जाए तो नहीं चला सकते। इसमें फायदा क्या हुआ? ऐसे-वैसे जो विकृत संस्कार थे न, वे वॉश आउट (खत्म) हो गए और अब नए सिरे से नई बात! नई चीज़ और सब कुछ नया ही चलेगा और अलग ही प्रकार का आश्चर्य। जैसी भगवान महावीर के समय में थी वैसी शांति बरतेगी! और आज के ये बाल बढ़ाने वाले पागल, ये ही अक़्लमंद कहलाएँगे। जिन्हें 'घनचक्कर' कहा जाता है, वे ही समझदार बनकर घूमेंगे।

आज के बच्चों ने तो बल्कि बाल बढ़ाकर ओपन किया है कि जो बाल कटवाते हैं वे मेन्टल हॉस्पिटल के लोग हैं और हम मेन्टल हॉस्पिटल से बाहर वाले हैं और ऊपर से मेन्टल हॉस्पिटल के लोग इन्हें कहते हैं, कि 'ये मेन्टल हैं!' इसलिए हिन्दुस्तान को कोई नुकसान होने वाला नहीं है। ये 'ज्ञानी पुरुष' के आशीर्वाद हैं।

कुदरत में बुद्धि मत लगाओ

द वर्ल्ड इज़ द पज़ल, इटसेल्फ पज़ल हो चुका है। उसमें ये लोग क्या उसे नाप सकते थे? ये लोग इस पज़ल को नापने में लगे हुए हैं। कहते हैं कि, '1947 में जनसंख्या इतनी थी तो 2000 में इतनी हो जाएगी।' अरे, चक्कर, घनचक्कर! पहले साल में एक बच्चा था, तीसरे साल में दूसरा हुआ, इसलिए अस्सी साल की उम्र में तो 30-40 हो जाएँगे? हिसाब क्या निकाल रहा है? अरे पागल, घनचक्कर हो या क्या हो? कैल्क्युलेशन नहीं निकालते मनुष्यों का, और ये सब हिसाब लगाने बैठे हैं, ये सभी घनचक्कर हैं। लड़का पाँच साल का था तब तक सवा-दो फुट का था और सोलह साल की उम्र में पौने पाँच फुट लंबा है, इसलिए अस्सी की उम्र में इतना लंबा हो जाएगा! हे घनचक्करों, हिन्दुस्तान के मनुष्यों को क्यों तोलते रहते हो? 2000 में इतने हो जाएँगे और 3000 में इतने हो जाएँगे। यदि आप ऐसा कहते हो कि दो हज़ार में इतने हो जाएँगे, तो आज से पाँच हज़ार साल पहले कितने थे, वह बताओ न! यदि आपको यह गिनती करनी आती हो तो कह दो कि तब कितने लोग थे। तब वे कहेंगे कि, 'वह हमें मालूम नहीं।' तो फिर पगले! तुझे पत्नी का पति बनना नहीं आता, तो जाकर पत्नी को माँ कहना। घनचक्करों, कैसे पैदा हुए हो? तेरी पत्नी को माँ कहना तब तेरा काम होगा! बेटा माँ कहता है और तू भी माँ कहना, यानी पति-पत्नी नहीं चाहिए रास्ते में। जनसंख्या गिनने निकले हैं, कैल्क्युलेशन (गिनती) करने बैठे हैं कि 1980 में इतने और 1990 में इतने हो जाएँगे और 2000 में इतने हो जाएँगे! तो इन्हें कोई पकड़ने वाला भी नहीं निकलता! सरकार भी एक्सेप्ट (स्वीकार) करती है। ऐसी बात जो करे न, जो बात नॉनसेन्स (बकवास) लगती हो, ऐसों को तो पकड़ लेना चाहिए और जेल में डाल देना चाहिए। क्यों ऐसी बात करता है? इससे तो पब्लिक (प्रजा) बिगड़ जाएगी।

हिन्दुस्तान का कुछ बिगड़ने वाला नहीं है और जिस देश में संतपुरुष हैं, सत्पुरुष हैं और प्रकट 'ज्ञानी पुरुष' हैं, वहाँ पर क्या बिगड़ने वाला है? इन तीनों की हयाती हो वहाँ कुछ भी नहीं बिगड़ सकता, बल्कि बिगड़ा हुआ सुधरने लगा है। भयंकर रूप से बिगड़ चुका था, हिन्दुस्तान की तरह इस दुनिया का कोई भी देश इतनी अधोगति में नहीं गया था, भयंकर बिगड़ गया था। अनाचार को ही सदाचार माना था और सदाचार को तो देशनिकाला ही दे दिया था, एक्सपोर्ट (निर्यात)! तो अब एक्सपोर्ट हो चुका माल इम्पोर्ट (आयात) हो रहा है। ये बाल बढ़ा रहे हैं न इसलिए। ये जो बाल बढ़ा रहे हैं न, वे इम्पोर्ट कर रहे हैं! बाल कटवाकर एक्सपोर्ट कर दिया था।

पूरा वर्ल्ड (दुनिया) मेन्टल (पागलों का) हॉस्पिटल बन गया है तो ये बच्चे भी अभी मेन्टल ही कहे जाएँगे न? फिर क्या हो सकता है? पूरा हॉस्पिटल ही मेन्टल, ऐसे में 'ज्ञानी पुरुष' भी 'बाहर' से तो मेन्टल ही कहे जाएँगे न? पूरा हॉस्पिटल ही मेन्टल है, तब 'ज्ञानी पुरुष' उसमें आ गए न? क्योंकि 'ज्ञानी पुरुष' की देह भी मेन्टल के जमाने में जन्मी, इसलिए मेन्टल तो हैं ही न? सब मेन्टल कहा जाएगा। मेन्टल हॉस्पिटल ही है यह तो! पर अब यह परिवर्तन आ रहा है।

आज के ये ही बच्चे सयाने और समझदार होकर एक दिन बाल कटवा देंगे, फिर मेन्टलपन जाएगा और (आज) ये जो बाल कटवाकर सयाने-सज्जन होकर फिरते हैं और अनाचार को सदाचार मानते हैं! (वे) कैसे? अनाचार को सदाचार, भाषा ही बदल डाली इन लोगों ने! 'मेन्टल!' और पूरा दिन झगड़े-झगड़े, और झगड़े बगैर का एक भी घर नहीं है। कुछ का कुछ बखेड़ा हुआ ही होता

है, तीन लोगों में तैंतीस मतभेद पड़ चुके होते हैं शाम तक! ग्यारह-ग्यारह हर एक के हिस्से में आए न!

हिन्दुस्तान 2005 में पूरे वर्ल्ड का केन्द्र बन चुका होगा! अब 31 साल बाकी बचे हैं। तब ये बच्चे 56-60 साल के हो जाएँगे, तब उनमें मेन्टलपन रहेगा नहीं। उनके लंबे बाल थे न, उससे एक दिन मेन्टलपन निकल जाएगा, तब एक दिन कटवा देंगे। एक लंबे बाल वाला लड़का मोटर में मेरे आगे बैठा था। तो मैंने उसे कहा कि, 'भाई, तूने इतने बाल क्यों बढ़ाए हैं कि जिससे ये उड़कर पीछे वाले को परेशान करें?' जबकि उसके बाल मुझे कुछ परेशान नहीं कर रहे थे, फिर भी मैंने यों ही कहा। तो वह लड़का तुरंत बाल कटवाकर आया और मुझे नमस्कार करके गया और फिर उसने दृढ़ निश्चय किया कि फिर से नहीं बढ़ाऊँगा!

पुण्य से सब पॉश प्राप्त हुआ

प्रश्नकर्ता : आजकल के बच्चों को सिर्फ फैशन की पड़ी होती है। सब कपड़े और इन सब चीज़ों के वे शौकिन होते हैं।

दादाश्री : फैशन की भी नहीं पड़ी है, मोही हैं ये तो! वह तो दर्जी ऐसा उल्टा सीलकर देता है न, तो वैसा पहनकर घूमते हैं लेकिन मोह, फैशन नहीं। ये प्रजा मोही कहलाती हैं। इस काल में दर्जी ने लोगों को नचाया है! एक बार टाइट कपड़े बना देता है, तो वैसे ही पहनकर घूमते हैं। कभी इतना ढीला बना देता है, उसे भी पहनकर घूमते हैं। इसे तो नॉनसेन्स कहते हैं, परंतु ऐसे हैं इसलिए हिन्दुस्तान का भला होने वाला है। ऐसों की ज़रूरत थी। पब्लिक को ऐसा हो जाने की ज़रूरत थी।

देखो न, आजकल के लड़के इतने लंबे बाल रखते हैं, ऐसा क्यों? उनके अभिप्राय में है कि ऐसा अच्छा दिखता है। जबकि इन भाई को लंबे बाल रखने के लिए कहें तो? उन्हें वह खराब दिखता है। इन अभिप्रायों का ही साम्राज्य हैं। बुद्धि ने जिसमें सुख माना उसके अभिप्राय हैं।

प्रश्नकर्ता : यह तो हर रोज़ मूँछ काटनी न पड़े न, इसलिए रहने देते हैं।

दादाश्री : उसमें हर्ज़ नहीं। मूँछे न रखनी हो तो उसमें भी हर्ज़ नहीं है। वह तो स्वतंत्र शौक की बात है न! मुंडवानी है या नहीं मुंडवानी है, उनके शौक की बात है न। वे साधु तो इतनी लंबी (मूँछे) रखते हैं न! उन्हें कहाँ पानी छिड़कना पड़ता है!

सत्युग में जो देवगति में गए थे, उन लोगों ने तो अभी तक देवलोक भोगा, उनका बैलेन्स वहाँ पूरा हो गया इसलिए यहाँ वापस लौट आए। सही टाइम पर, अपने दिवालियेपन का समय आ गया, तब वे पधारे। हो गए सादार न! वे पधारे इसलिए अभी काम तो शुरू हो गया न! फिर सुंदर भी होते हैं, ऐसे बदसूरत नहीं होते। इतने बाल-वाल रखकर घूमते हैं!

सीधे देवलोग आए हैं और अभी उनका काल निर्माण हो चुका है, उन दिनों से ही निर्माण हो चुका होता है कि किसी खास काल में ही ये लोग आएँगे। दादा के आने के बाद ही आएँगे। इन सभी का काम हो जाएगा। यह तो, अभी अपना अक्रम विज्ञान प्रकाश में आएगा, तब ये सभी लड़के काम निकाल लेंगे।

यह अब कुछ भी नहीं रहा, परंतु ये देवलोग आए तो सही, नहीं? वहाँ से छोड़ा तो है। उस संगीत-सभा से आए हैं न, इसलिए यहाँ भी संगीत चाहिए ही।

प्रश्नकर्ता : ये जीव आते हैं, तभी सब प्रकाश में आता है न?

दादाश्री : प्रकाश में आने के लिए ही ये सब हुआ है।

बीच में तीन-चार पीढ़ी ऐसी आ गई थी, इन पिछले लगभग अस्सी सालों में तब मूँछे मुंडवाने की शुरूआत हो गई थी। वह चारेक पीढ़ी तक चला, फिर अब वह बंद हो गया। वापस नये प्रकार का आएगा। वापस मूँछे रखेंगे, दाढ़ी रखेंगे और सारे कई प्रकार के फैशन चलेंगे! एक समय सब फ्रेंच कट वाले ही दिखते थे। जहाँ गाड़ी में (जाते वहाँ) सभी जगह फ्रेंच कट वाले! यानी सब बदलता रहता है। यह मूँछे मुंडवाने का रिवाज तो अपने देश में था ही नहीं। यह तो फॉरेन का सब आ गया है, ये युरोपियन आए और उनका रिवाज, इन लोगों में आ गया है। लेकिन अपने लोग सुधर गए हैं न! पहले पारसियों में सुधार हुआ, फिर धीरे-धीरे अपने लोग भी सुधर गए। वर्ना, अपने यहाँ तो मूँछे मुंडवाने पर लोग पूछते थे कि भाई, किसका देहांत हुआ है? मैं तो नहीं जानता? अरे! यह अपशकुन की बात हो गई? हाँ, किसी का देहांत हो जाए तभी मूँछे मुंडवाना, ऐसा अपने लोग कहते थे। लेकिन अब ऐसा कुछ भी नहीं रहा है। आजकल यह बाल बढ़ाने का फैशन चल रहा है।

परंतु ये लोग पुण्यशाली तो हैं न! देखो न! इनके आने से पहले कैसे-कैसे मकान बन गए! इलेक्ट्रिसिटी कैसे उत्पन्न हो गई! ये सब कैसी-कैसी तैयारियाँ हो गईं! वर्ना वे जो दादर में रहते थे न, उन्हें तो शाम के समय कितने ही मच्छर काट लेते थे! दादर में तो बेहद मच्छर थे और मुंबई शहर में यदि कभी किसी पहचान वाले के यहाँ भूलेश्वर में रुक गए हों न, तो दिन भर संडास की बदबू आती थी, उन चालों में बदबू ही आती रहती थी! वहाँ तो गलती से भी नहीं जा सकते थे। उसके बजाय ये मच्छर अच्छे थे! बहुत हुआ तो रात को मुँह में चले जाएँगे! परंतु आजकल के इन लंबे बाल वाले लड़कों ने तो, ऐसा कुछ भी देखा ही नहीं है! वे जानते ही नहीं कि यहाँ मच्छर थे। इन लोगों ने (मुंबई में) सभी जगह भीड़ ही देखी है।

अवस्था बदलते ही, पुरानी-नयी पीढ़ी का घर्षण

एक बार मैं गाड़ी में बैठा था। लगभग पच्चीस साल पहले की बात है। मैं तो गाड़ी में बैठने गया, तब सभी लड़के पैर पर पैर रखकर आमने-सामने बैठे थे, खड़े रहने की भी जगह नहीं थी। मैंने एक छोटी बेग हाथ में रखी थी। यह ज्ञान होने से पहले की बात कर रहा हूँ। बेग ऐसी इस्तेमाल करता था कि भले दो महीने, चार महीने चले तो हर्ज नहीं है, लेकिन उस पर हम बैठ जाते थे। वह चमड़े की बेग टूट जाए तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन वह बैठने के लिए चाहिए, ऐसे कुरसी की तरह। इसलिए ट्रेन में घुसने के बाद बेग रखने लगा, तब वे लड़के कहने लगे, 'चाचा, किसलिए बेग पर बैठने जा रहे हो? बेग पर बैठ नहीं पाओगे। आप यहाँ सीट पर बैठिए।' उन लड़को में से एक लड़का उठकर नीचे बैठ गया और मेरे लिए बैठने की जगह कर दी। मुझे तो बैठने के लिए बहुत हो गई। फिर मैं बैठा। उसके बाद मैंने लड़कों से कहा, 'अरे, तुम्हें यह भीड़ नहीं लगती! तुम लोगों को ये भीड़ कैसे पसंद आती है? तुम लोग पैर पर पैर रखकर, कंधे से कंधा मिलाकर सभी बैठे हो, ऐसी अनहद भीड़ में!' तब उन लड़कों ने जो जवाब दिया, मुझे वो जवाब *नोंध* (नोट) करने जैसा लगा। उन्होंने मुझसे कहा कि, 'चाचा, आप भीड़ किसे कहते हो?' वह लड़का उल्टा मुझे पूछ रहा था कि आप भीड़ किसे कहते हो? तब मैंने कहा, 'अरे, ये भीड़ नहीं है?' तब वो कहता है कि, 'नहीं, इसे भीड़ नहीं कहा जाता। आप इसे भीड़ कहते

हैं?' मैंने कहा कि, 'भाई, मैंने तो खुलापन (बिना भीड़ के) देखा है इसलिए मुझे तो ये भीड़ लगती है, आप लोगों ने शायद खुलापन देखा नहीं है।' तो कहने लगा, 'नहीं, हम जन्में तब से ही हमने ऐसा ही देखा है, इसलिए, खुलापन क्या होता है यह हम जानते ही नहीं हैं। हम तो यही जानते हैं कि ऐसा ही होता है, भीड़ होती ही है।' मैंने कहा कि, 'हमारे समय में हम जब मुंबई आते थे तब एक डिब्बे में बैठे हों तो साथ में कोई व्यक्ति नहीं मिलता था तो दूसरे डिब्बे में किसी को ढूँढना पड़ता था! तब ऐसा था।' तब लड़के हँसने लगे कि 'ऐसा कैसे हो सकता है?' मैंने कहा, 'ऐसा ही था सब।' उन्होंने तो देखा ही नहीं था न ऐसा सब। उन लोगों ने तो, जन्में तब से ऐसा ही देखा था। लटककर आना और लटककर जाना और क्यू ही क्यू। क्यू (लाइन) बगैर तो कुछ देखा ही नहीं है न! हर जगह क्यू, शक्कर लेने में, तेल लेने में, टिकट लेने में, सभी जगह क्यू ही क्यू। तो ये सब पुराना बदलता रहता है, पिछला सब बदलता रहता है और नया आता रहता है। नयी-नयी अवस्थाएँ उत्पन्न होती ही रहती हैं जगत् में। और नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी का झगड़ा चलता ही रहता है।

जमाने के अनुसार एडजस्ट हो जाएँ

ये बूढ़े लोग घर में आएँ तो कहते हैं, 'यह लोहे की अलमारी? यह रेडियो? यह ऐसा क्यों है? वैसा क्यों है?' ऐसे दख़ल करते हैं। अरे, किसी युवक से दोस्ती कर। यह युग तो बदलता ही रहेगा। उसके बिना ये जिएँगे किस तरह? कुछ नया देखें, तो मोह होता है। नया नहीं हो तो जिएँगे ही कैसे? ऐसा नया तो अनंत आया और गया, उसमें आपको दख़ल नहीं करनी है। आपको ठीक नहीं लगे तो आप वह मत करना। यह आइस्क्रीम ऐसा नहीं कहती आप से कि 'हमसे भागो। आपको नहीं खाना हो तो मत खाओ।' यह तो बूढ़े लोग उन पर चिढ़ते रहते हैं। ये मतभेद तो जमाना बदला उसके हैं। ये बच्चे तो जमाने के अनुसार करते हैं। मोह यानी नया-नया उत्पन्न होता है और नया ही नया दिखता है। हमने बचपन से ही बुद्धि से बहुत सोच लिया था कि यह जगत् उल्टा हो रहा है या सीधा हो रहा है, और यह भी समझ में आया कि किसी को सत्ता ही नहीं है इस जगत् को बदलने की। फिर भी हम क्या कहते हैं कि जमाने के अनुसार एडजस्ट हो जाओ! बेटा नयी ही टोपी पहनकर आए तो ऐसा नहीं कहना कि 'ऐसी कहाँ से ले आया?' इसके बजाए तो एडजस्ट हो जाना, कि 'इतनी अच्छी टोपी कहाँ से लाया? कितने की आई? बहुत सस्ती मिली?' ऐसे एडजस्ट हो जाएँ।

'कॉमनसेन्स' का प्रभाव

संयोग उत्पन्न होते हैं, वहाँ पर आपको एडजस्ट होकर चलना चाहिए। आप पुरुष हो गए, मतभेद मत होने देना। वह मतभेद डाले तो भी मना लेना। मतभेद अर्थात् टकराव!

कोई हमसे टकराए पर हम किसी से नहीं टकराए, इस तरह रहें तो 'कॉमनसेन्स' उत्पन्न होगा। लेकिन हमें किसी से नहीं टकराना चाहिए, वर्ना 'कॉमनसेन्स' चला जाएगा! घर्षण अपनी ओर से नहीं होना चाहिए। सामने वाले के घर्षण से अपने में 'कॉमनसेन्स' उत्पन्न होता है। आत्मा की शक्ति ऐसी है कि घर्षण के समय कैसे बर्ताव करना, उसके सारे उपाय बता देती है और एक बार दिखा दे, तो फिर वह ज्ञान जाता नहीं। ऐसा करते-करते 'कॉमनसेन्स' बढ़ता जाता है। मेरा किसी से खास घर्षण नहीं होता। मेरा 'कॉमनसेन्स' ज़बरदस्त है इसलिए आप जो कहना चाहते हैं, वह तुरंत ही मेरी समझ में आ जाता है। लोगों को ऐसा लगता है कि ये दादा का अहित कर रहे हैं, लेकिन मुझे

तुरंत समझ में आ जाता है कि यह अहित, अहित नहीं है। सांसारिक अहित नहीं है और धार्मिक अहित भी नहीं है और आत्मा के संबंध में तो अहित है ही नहीं। लोगों को ऐसा लगता है कि आत्मा का अहित कर रहे हैं, लेकिन हमें उसमें हित समझ में आता है। इतना है इस 'कॉमनसेन्स' का प्रभाव। इसलिए हमने 'कॉमनसेन्स' का अर्थ लिखा है कि 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल (सभी जगह लागू होना)'। आज की जनरेशन में 'कॉमनसेन्स' जैसी चीज़ ही नहीं है। जनरेशन टू जनरेशन (पीढ़ी दर पीढ़ी) 'कॉमनसेन्स' कम होता गया है।

सारा व्यवहार कषाय रहित करें

ये बच्चे सारा दिन कान पर रेडियो लगाकर नहीं रखते? क्योंकि यह रस नया-नया उदय में आया है बेचारे को! यह उसका नया 'डेवेलपमेन्ट' है। यदि 'डेवेलप' हो गया होता, तो कान पर रेडियो लगाता ही नहीं। एकबार देख लेने के बाद वापस लगाता ही नहीं। नयी चीज़ को एक बार देखना होता है, उसका हमेशा के लिए अनुभव नहीं लेना होता। यह तो कान की नयी ही इन्द्रिय आई है, इसलिए सारा दिन रेडियो सुनता रहता है! मनुष्यपन की उसकी शुरूआत हो रही है। मनुष्यपन में हज़ारों बार आया हुआ मनुष्य ऐसा-वैसा नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : बच्चों को घूमने-फिरने का बहुत होता है।

दादाश्री : बच्चे कोई आप से बँधे हुए नहीं हैं। सब अपने-अपने बंधन में हैं, आपको तो इतना ही कहना है कि 'जल्दी आना।' फिर जब आएँ तब 'व्यवस्थित'। व्यवहार सब करना, लेकिन कषाय रहित करना। व्यवहार कषाय रहित हुआ तो मोक्ष, और कषाय सहित व्यवहार-वह संसार।

प्रश्नकर्ता : हमारा भतीजा रोज़ नौ बजे उठता है, कुछ काम नहीं हो पाता।

दादाश्री : आप उसे ओढ़ाकर कहें कि 'आराम से सो जा भाई'। उसकी प्रकृति अलग है, इसलिए देर से उठता है और काम अधिक करता है। जबकि कोई मूर्ख चार बजे से उठ गया हो, फिर भी कुछ नहीं करता। मैं भी हर एक काम में हमेशा लेट (लेट) होता था। स्कूल में भी घंटी सुनने के बाद ही घर से निकलता और हमेशा मास्टर जी की डाँट सुनता था! अब मास्टरजी को क्या पता कि मेरी प्रकृति (स्वभाव) क्या है? हर एक का 'रस्टन' अलग और 'पिस्टन' अलग-अलग होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन देर से उठने में 'डिसिप्लिन' (अनुशासन) नहीं रहता है न?

दादाश्री : यह देर से उठता है उसके लिए आप कलह करो, वही 'डिसिप्लिन' नहीं है। इसलिए आप कलह करना बंद कर दो। आपको जो-जो शक्तियाँ माँगनी हों, वे इन दादा से रोज़ सौ-सौ बार माँगना, सब मिलेंगी।

अब इन भाई को समझाया इसलिए उन्होंने तो हमारी आज्ञा का पालन किया, और भतीजे को घर में सभी ने कुछ भी कहना बंद कर दिया। हफ्ते के बाद परिणाम यह आया कि भतीजा अपने आप ही सात बजे उठने लग गया और घर में सबसे ज़्यादा अच्छी तरह काम करने लग गया!

सामान्य हो उतना अच्छा

आजकल के लड़के, इस जनरेशन के साथ मेल नहीं बैठ पाता बुज़ुर्गों का। इसलिए उन्हें ठोकरें खा-खाकर रहना पड़ता है। सामने वाला उल्टा बोलता है, परंतु वैसा ये चला लेते हैं। भीतर बहुत ही *अजंपा* (बेचैनी, अशांति) होता रहता है और मन में ऐसा भी होता है कि अरे, इससे पहले उसे मृत्यु आ जाती तो वह अच्छा था। या तो मुझे मृत्यु आ जाती तो अच्छा था।

दो में से एक तय करता है। ऐसे *अजंपे* से सब चल रहा है।

माँ को परेशान करे तब भी उसे यह प्रिय लगता रहता है जबकि पिताजी को सहन नहीं होता, पिताजी को कैसे सहन हो सकता है? जहाँ बुद्धि की लाइट है। स्त्रियों में भी बुद्धि है, परंतु मोह है न! उस मोह की वजह से अँधेरा छा जाता है बुद्धि पर? जबकि आपका उस पर फोकस होता है इसलिए उलझन हो जाती है।

इस काल में वे पति कहेंगे, 'मैं वृद्धाश्रम में जा रहा हूँ, आप आ रही हो क्या?' तब पत्नी कहेगी, 'नहीं, मैं बच्चों के साथ रहुँगी, बहु अच्छी है न!' नहीं आती, आएगी नहीं कभी भी। यह बात बाहर के लोगों के लिए है। बाहर के लोगों को कितनी परेशानी है, वह तो मुझे समझ में आता है!

यदि मेरे सात बच्चे होते न, वे बच्चे अगर ऐसे परेशान करते न, तो जैसे ही वे उल्टा बोलते, वैसे मैं खुश हो जाता। चल, तू पागल है, पर मैं समझदार हूँ न! परंतु मैं चेहरे से उल्टा व्यक्त करता। चेहरे से ऐसा दिखाना पड़ता है कि मुझे बहुत दुःख हुआ और अंदर से मैं खुश होता कि उसकी बाज़ी कमज़ोर पड़ गई! जो मशीन परेशान करे न, उसे हम कमज़ोर कह देते हैं। मशीन मुझसे बोलती है न तो 'मैं पक्का हूँ' ऐसा कह देता हूँ। विनय रखे तो मैं समझ जाता हूँ कि यह पक्का है। परंतु आप ऐसे हैं और वैसे हैं, ऐसा बोले तो मैं मान लेता हूँ कि यह वीक (निर्बल) है बेचारा, दया रखने जैसा है। हम क्या ऐसे वीक हैं?

बच्चों के साथ डील (व्यवहार) करना न आए, वह आपकी भूल है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, भूल है।

दादाश्री : हाँ, सभी जगह यही की यही भूलें हुई थी आपकी, नहीं? इन सभी जगह पर जहाँ देखो वहाँ यही की यही भूलें! लोग मोह से मेरा लड़का, अरे नहीं है लड़का, ज़रा टकराकर देखना, उसके विरोध में होकर देखना एक घंटा! वह तुम्हारा लड़का है या नहीं, पता चल जाएगा! वह तो रीत के अनुसार सब अच्छा है। गुप्त रूप से प्रेम रखना है, उपर से प्रेम व्यक्त नहीं करना चाहिए बच्चों पर, वह तो आसक्ति कही जाती है। इसलिए ज़रा रीति के अनुसार करना है सब आपको। अपना कुछ कल्याण तो करना चाहिए न! किस जन्म में बच्चे नहीं थे? हर एक जन्म में बच्चे थे ही न! तो अभी किसलिए इतना अधिक मोह? उसके बावजूद भी बच्चों को परेशान नहीं करना है। उन्हें ज़रूरत हो, जो चाहिए वह सब कुछ देते रहिए! रात को सो जाते हैं तब बगल में लेकर सो जाते हो? वह कहेगा, मुझे अच्छा नहीं लगता तो? इसलिए रीति के अनुसार जितना हो सके उतना ही करना चाहिए।

पॉज़िटिव ढूँढकर आनंद में रहो

प्रश्नकर्ता : हम चाहे जितना करें, परंतु सामने वाला नहीं सुधरे तो क्या करें?

दादाश्री : खुद सुधरे नहीं और लोगों को सुधारने गए, उससे लोग बल्कि बिगड़ गए। सुधारने जाएँ कि बिगड़ते हैं। खुद ही बिगड़ा हुआ हो तो क्या होगा? खुद का सुधरना सब से आसान है! हम नहीं सुधरे हों और दूसरों को सुधारने जाएँ, वह मीनिंगलेस (अर्थहीन) है। तब तक अपने शब्द भी वापस आएँगे। आप कहो कि, 'ऐसा मत करना।' तब सामने वाला कहेगा कि, 'जाओ, हम तो ऐसा ही करेंगे!' यह तो सामने वाला बल्कि अधिक उल्टा चला!

अहंकार से सामने वाले को डरा-धमकाकर काम करवाने जाएँ, तो सामने वाला अधिक

बिगड़ेगा। जिसमें अहंकार नहीं है, वहाँ उसके प्रति हमेशा सभी 'सिन्सियर' रहते हैं, वहाँ मॉरेलिटी होती है।

'अहंकार नुकसानदायक है' ऐसा जान लो, तब से सारा काम सरल हो जाता है। अहंकार का रक्षण करने जैसा नहीं है। अहंकार खुद ही रक्षण कर ले, ऐसा है।

हमारा अहंकार नहीं होना चाहिए। अहंकार सभी को चुभता है। छोटे बच्चे को भी ज़रा सा 'बेअक्ल, मूर्ख, गधा', यदि ऐसा कहा तो वह भी टेढ़ा चलता है और 'बेटा, तू बहुत समझदार है', कहें कि तुरंत वह मान जाता है।

प्रश्नकर्ता : और उसे 'बहुत समझदार' कहें तो भी वह बिगड़ जाएगा?

दादाश्री : 'मूर्ख' कहें तो भी बिगड़ जाएगा और 'बहुत समझदार' कहें तो भी बिगड़ जाएगा। क्योंकि 'समझदार' कहोगे तो उसके अहंकार को 'एन्करेजमेन्ट' (प्रोत्साहन) मिल जाएगा और 'मूर्ख' कहोगे तो 'साइकोलोजिकल इफेक्ट' (मानसिक असर) उल्टा पड़ेगा। अक़्लमंद इन्सान को 25-50 बार 'मूर्ख' कहोगे तो उसके मन में वहम हो जाएगा कि, 'वास्तव में क्या मैं पागल हूँ?' ऐसा करते-करते वह पागल हो जाएगा। इसलिए मैं पागल को भी 'तेरे जैसा समझदार इस जगत् में कोई नहीं' ऐसा कर-करके 'एन्करेजमेन्ट' देता हूँ। इस जगत् में हमेशा 'पॉज़िटिव' रहो। 'नेगेटिव' की तरफ मत चलना। 'पॉज़िटिव' का उपाय मिलेगा।

मैं तो पॉज़िटिव करना चाहता हूँ, नेगेटिव सेन्स लाना ही नहीं चाहता। यदि वह अच्छा हो न, तो उसे अच्छे में पुष्टि दे देता हूँ। यानी अच्छा इतना अधिक प्रकाशमान हो जाए, इतनी अधिक जगह रोकता जाए कि नेगेटिव खत्म ही हो जाए। इस जगत् को नेगेटिव ही अभी तक टकराता रहा है! हमें किसी के भी अवगुण नहीं देखने चाहिए। देखने ही हों, तो गुण को देखो! हमें सौ नेगेटिव में से एक पॉज़िटिव ढूँढकर आनंद में रहने जैसा है।

सन् 1921-22 का संधिस्थान

सारा वातावरण आनंद में रखो। भूल वालों को भी आनंद में रखकर फिर काम लेना है। और मेरे साथ बैठते हो रोज़, कुछ न कुछ सीखने को तो मिलता ही है न! लेकिन जब तक आप वह पुराना निकालोगे नहीं, तब तक यह नया एडजस्ट नहीं हो पाएगा क्योंकि वह तो आपको विरासत में मिला हुआ है, उसे कैसे निकाल पाओगे?

प्रश्नकर्ता : बाप-दादा का प्रेक्टिकल देखा हुआ है।

दादाश्री : वह तो उन दिनों कीमती रहा होगा, आज कीमती नहीं है। मेरा क्या कहना है? सन् 1921 और 1922 का संधिस्थान, सन् 1921 से पहले जिनका जन्म हुआ है उन्हें आपको जो कहना हो, वह कहना लेकिन सन् 1922 के बाद वालों को मत कहना।

प्रश्नकर्ता : उनमें से भी वॉर क्वॉलिटी में (प्रथम विश्वयुद्ध के समय) जिनका जन्म हुआ, उन्हें बिल्कुल नहीं कह सकते।

दादाश्री : कुछ भी नहीं कह सकते। ये वॉर क्वॉलिटी वालों को कुछ भी नहीं कह सकते। परंतु सन् 1922 के बाद मैंने देखा, कि यह सन् 1922 की साल। उन दिनों दो संधिस्थान बने, सन् 1921 और 1922 में। सन् 1921 में जिनका जन्म हुआ वे धोती वाले, सभी हंड्रेड परसेन्ट और सन् 1922 में पायजामे आए। तभी से पायजामे बढ़ते, बढ़ते, बढ़ते सन् 1921 और 1922 का संधिस्थान। किसी को पायजामे में देखता तो मैं

समझ जाता कि सन् 1922 वाला है। बाकी, वॉर क्वॉलिटी वाले माल की तो बात ही अलग है! सन् 1921 और 1922 का मैंने हिसाब ढूँढ निकाला। दिनोंदिन मनोबल टूटते चले गए, अंत:करण में पूरा बल ही! तो हमसे पहले के बुज़ुर्ग बल वाले थे, ऐसा नहीं।

प्रश्नकर्ता : सरल रहे होंगे।

दादाश्री : सरल भी अबुद्धि के कारण, बुद्धि कम थी उसके कारण, जब तक बुद्धि रहती थी तो अरे, सरल रहते ही नहीं थे, ऐसे थे। लोग चाहे कुछ भी कहें कि हमारे बुज़ुर्ग बहुत अच्छे थे, परंतु वह तो, उन्हें जहाँ-जहाँ स्कोप मिला था न, वहाँ स्कोप नहीं छोड़ा। यानी स्कोप के बगैर ये सीधे रहते थे। आपके भाई और आप दोनों का झगड़ा चल रहा हो न, तब भी आपकी बाड़ में गिलकी लटक रही हो, तो तोड़ लेते थे, ऐसा नहीं कि यह पराए का ले रहा हूँ। वह तो खोजता ही रहता था ऐसा। फिर बनिया, ब्राम्हण सभी की ऐसी नीयत थी। यह तो अभी बहुत अच्छी है। मैंने तो सभी बुज़ुर्गों को देखा था न! भोले क्यों कहते थे? देखा ही नहीं था। दूसरा गाँव ही नहीं देखा था। फिर क्या? डामर वाला रास्ता देखते तो झंझट होती न? उन दिनों तो मैं बाईस-तेईस की उम्र में मुंबई जाकर आया था न! उसके बाद भादरण जाता था न तब कोई इस तरह पचास-पचहतर लोगों पर यों ही टें-टें कर रहा हो न! तब मैं कहता था, 'काका, मुंबई में संडास देखकर आओ, सेठ लोगों के कैसे हैं?' तब मैंने कहा, 'यह आपकी सारी मिल्कियत एक संडास में...! क्या?' अरे, बेवजह टें-टें करता रहता है! बहुत खराब, खराब (बेकार) सब। धर्म के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

अगर मंदिर में जाते थे तो प्रसाद में चित्त। प्रसाद बंट गया न, प्रसाद! अरे, प्रसाद में.. तो कितना हलवा होता था? इतना ही, ऐसे खरोंचते उसे भी इस तरह चाटते रहते थे। अरे छोड़ न, क्या चाट रहा है इसे? जबकि आजकल के लड़के तो हम देते हैं न पेड़ा तब भी नहीं लेते, आपने देखा है ऐसा सब? अपने बुज़ुर्गों का देखा है? आपको लगता है ऐसा? अपने बुज़ुर्गों का। झूठ नहीं बोल रहा हूँ न? तुमने यह सब देखा है? मैंने बहुत देखा है।

बनिया-पाटीदार सभी सब्जी वगैरह चुराकर लाते थे। हम भी करते थे न! लेकिन मुझमें बचपन से ही एक आदत बहुत अच्छी थी। वे कहीं भी ले जाए उनके खेत में, सभी सब्जियाँ बाँधकर ले आते थे, परंतु मैं घर पर बाँधकर नहीं लाता था। कभी भी घर पर कुछ लेकर नहीं आया, कभी भी नहीं आया। कुछ-कुछ ध्येय बहुत अच्छे थे। वहाँ पर, वहाँ पर मूली-मुँगरी खाए उतने सही, बाकी घर पर नहीं लाने के। वे सभी लोग तो बाँधकर ले आते थे।

उसके बावजूद भी ऐसा नहीं था, बिल्कुल ऐसा नहीं था। टेन (दस) परसेन्ट लोग तारीफ करने लायक थे। आजकल वैसे लोग नहीं मिलते, टेन परसेन्ट लोग ऐसे थे।

अध्यात्म मार्ग, वह हृदय वालों की खोज़बीन

ये सब पुराने बुज़ुर्ग बुद्धि में नहीं है, हार्ट पर रहे हुए हैं, इसलिए उनका जवानों के साथ में मेल नहीं बैठता। क्योंकि जवान सिर्फ बुद्धि में ही पड़े हुए हैं!

बुद्धि का वेग तो अंदर बीच में दखल देता है। मृदु-ऋजु होना चाहिए, विनम्रता होनी चाहिए। ऋजु अर्थात् सरलता। ऐसे सारे गुण होने चाहिए। यों ही कोई गप्प चलती है क्या? इसलिए हार्ट (हृदय) पर आ जाओ। यह जगत् जब बुद्धि का प्रचार छोड़ देगा, हार्ट पर आ जाएगा, तब फिर

से सरल हो जाएगा सब कुछ। वेग पूरा हार्टिली होना चाहिए।

यह (बुद्धि) नुकसान पहुँचाती है, परेशान करती है, अंदर सुख उत्पन्न नहीं होने देती। हार्ट की बात हेल्प करती है। बुद्धि की बात हेल्प नहीं करती, उल्टा ही रास्ता जबकि हार्ट की बात हमें निबेड़ा ला देती है।

हमारी एक बात भी बुद्धि की नहीं होती। यहाँ इन सभी पुस्तकों में, बुद्धि की बात नहीं है, हार्टिली बात है। यहाँ जितने शब्द बोले जाते हैं न, अभी तक जितनी पुस्तकें बनी हैं, उनमें बुद्धि से एक भी बात नहीं है। बुद्धि होती है वहाँ एटिकेट (शिष्टाचार) होते हैं। सारे रोग घुस चुके होते हैं। कोई रोग बाकी नहीं रहता।

हार्ट आराम से बैठने देता है जबकि बुद्धि चैन से बैठने ही नहीं देती। कुछ न कुछ ढूँढती रहती है। यह ढूँढती है, वह ढूँढती है, दिन भर यही, क्योंकि उल्टे रास्ते ले आई है, स्थिर नहीं होने देती जबकि हार्ट स्थिर होने देता है, चैन से बैठने देता है। हृदयपूर्वक का हो वहाँ एकता और बुद्धिपूर्वक का आया कि वहाँ पर दखल। बुद्धि का दखल बढ़ जाता है तब हार्ट जल जाता है और हार्ट जल जाता है तब कोई फायदा नहीं हो सकता फिर।

यह दुनिया बुद्धि से उलझी हुई है और बुद्धि यानी विकल्प। ऐसा नहीं और ऐसा, ऐसा नहीं और ऐसा, शांति से बैठने ही नहीं देती है कभी जबकि हार्ट यानी विकल्पों को बंद करने का साधन। हार्टिली मोक्ष में जाते हैं और बुद्धि वाले संसार में भटकते हैं। ये दो नियम हैं। अध्यात्म मार्ग, वह बुद्धि वालों की खोज़बीन नहीं है, हृदय वालों की खोज़बीन है। हृदय के विचार, हृदय की वाणी, हृदय का वर्तन, वे तो भगवान बना देते हैं। हार्टिली!

हमारे समय की प्रजा विषय में पवित्र

हमारे समय की वह प्रजा एक बात में बहुत अच्छी थी। विषय विचार नहीं। किसी स्त्री के प्रति कुदृष्टि नहीं। होते थे, सौ में से पाँच-सात प्रतिशत व्यक्ति ऐसे होते भी थे। वे सिर्फ विधवाओं को ही खोज़ निकालते थे और कुछ नहीं। जिस घर में कोई (पुरुष) रहता नहीं हो, वहाँ विधवा यानी बिना पति का घर कहलाता था। हम चौदह-पंद्रह साल के हुए, तब तक लड़कियों को देखते तो 'बहन' कहते थे, बहुत दूर की रिश्तेदार हो, फिर भी। तब वातावरण ही ऐसा हुआ करता था। क्योंकि दस-ग्यारह साल के हों तब तक तो दिगंबरी घूमते थे। दस साल का हो तो भी दिगंबर घूमता था। दिगंबर का अर्थ समझे?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ, समझ में आ गया।

दादाश्री : और उस समय माँ कहती भी थीं, 'अरे दिगंबर, कपड़े पहन, दिगंबर जैसा।' अर्थात् दिगंबर दिशाएँ रूपी वस्त्र। अत: विषय का विचार ही नहीं आता। इसलिए झंझट नहीं। अत: विषय की जागृति ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : यानी समाज का एक तरह का प्रेशर था, इसलिए?

दादाश्री : नहीं, समाज का प्रेशर नहीं। माँ-बाप का दृष्टिकोण, संस्कार! तीन साल का बच्चा यह नहीं जानता था कि मेरे माँ-बाप का ऐसा कुछ संबंध है। इतनी ज़्यादा अच्छी सीक्रेसी (गुप्तता) होती थी! और ऐसा हो, उस दिन बच्चे दूसरे कमरे में सो रहे होते थे। ऐसे थे माँ-बाप के संस्कार। आजकल तो यहाँ बेडरूम और वहाँ बेडरूम। माँ को एक तरफ बेटा होता है और बहु को भी बेटा होता है। जमाना बदल गया न! बेडरूम, डबलबेड होते हैं न?

जबकि कोई भी पुरुष उन दिनों एक बिस्तर

में नहीं सोता था, कोई नहीं सोता था। उन दिनों कहावत थी कि स्त्री के साथ पूरी रात सो जाए तो वह स्त्री हो जाता है। उसके पर्याय स्पर्श करते हैं। तो कोई भी ऐसा नहीं करता था। यह तो किसी अक़्लमंद ने खोज़बीन की है। डबलबेड बिकते ही रहते हैं! इससे प्रजा हो गई डाउन। डाउन होने से फ़ायदा क्या हुआ? वे तिरस्कार सारे चले गए। अत: मैं तो खुश हो गया कि 'अच्छा हुआ ये डाउन हो गए।' अब जो डाउन हो चुके हैं, उन्हें चढ़ाने में देर नहीं लगेगी। लेकिन तिरस्कार और वह सब पागलपन चला गया एकदम से! नोबल हो गए, नोबिलिटी आ गई। बहुत फायदा हुआ है। अंग्रेज और ये सभी इकट्ठे हो गए, वह बहुत अच्छा हुआ, तिरस्कार चले गए।

डबलबेड नजाने कब आ गए?

अरे, ये डबलबेड तो हिन्दुस्तान में होते होंगे? किस प्रकार के जानवर हैं? हिन्दुस्तान के स्त्री-पुरुष कभी भी एक साथ एक रूम में रहते ही नहीं थे! हमेशा अलग ही रूम में रहते थे! उसके बजाय यह देखो तो सही! आजकल तो ये बाप ही बेडरूम बनवा देते हैं, डबलबेड! तो युवा लोग समझ गए कि यह दुनिया ऐसे ही चलती रहती है। आपको पता है कि पहले स्त्री-पुरुष के अलग रूम में बिस्तर होते थे? आपको पता नहीं है? यह सब मैंने देखा है। आपने वे डबलबेड देखे हैं? क्या? क्या कह रहे हैं?

प्रश्नकर्ता : डबलबेड आ जाए ऐसे कमरे ही कहाँ थे?

दादाश्री : एक तरह से अच्छा है, ये लड़के सभी यूज़लेस (निकम्मे) निकले हैं न! एकदम झूठा माल, बिल्कुल झूठा माल! लेकिन उनसे कहा हो कि इस हॉल में पच्चीस लोग सो जाओ, तो तुरंत सभी सो जाएँगे। और उन्हें पिता सिखलाते हैं कि 'जाओ, डबलबेड ले आओ'। तो फिर वैसा भी सीख जाते हैं बेचारे। उन्हें ऐसा कुछ नहीं है। आज डबलबेड है तो यहाँ पर दूसरे दिन ऐसा भी हो सकता है। ऐसा कुछ नहीं है। यह तो बाप टेढ़े हैं, बरकत नहीं ऐसे उल्टे रास्ते पर ले जाते हैं।

मेरे संपर्क में आया हुआ एक भी लड़का झूठ बोलता ही नहीं है। भय लगता है फिर भी झूठ नहीं बोलता। अब उन लड़कों को देखकर मुझे ऐसा लगता है कि मेरे समय में कोई लड़का सच बोलता नहीं था। डाँट पड़ने की जगह हो वहाँ सच नहीं बोलता था, ज़रा-सा अपमान हो जाए ऐसी जगह हो तो भी सच नहीं बोलते थे। जबकि ये तो चाहे कुछ भी हो जाए, मार डालने वाले हों तो भी झूठ नहीं बोला है। तो देखो न, ये प्रजा कितनी अच्छी हैं! हिन्दुस्तान का भविष्य कितना उज्ज्वल है!

कड़क या नरम लौकी, कौन सी पहले पके?

मनुष्य की कम उम्र और एक तरफ नरम लौकी और मनुष्य की ज़्यादा उम्र और एक तरफ कड़क लौकी, तो कौन सी सब्ज़ी ज़ल्दी पकेगी?

प्रश्नकर्ता : वह नरम ही पकेगी न!

दादाश्री : और वह कड़क?

प्रश्नकर्ता : पकेगी ही नहीं।

दादाश्री : उसे पकने में देर लगेगी। वह नरम लौकी तो जल्दी पक जाएगी, इस तरह मुड़ जाएगी। इसलिए ये जवान लोग तो जल्दी मुड़ जाते हैं।

आपका बेटा हो, भतीजा हो या कोई भी हो और वह आगे बढ़ रहा हो तो आपको उसकी हेल्प करनी चाहिए। हमने तो बचपन से ही ऐसा तय किया था, परंतु इन सभी बुज़ुर्गों को मैंने देखा

है। ज़रा सा कोई आगे बढ़ा कि मार ठोककर, धक्का मारकर पीछे गिरा देंगे और पीछे रह गया हो तो उसे आगे ले आएँगे, लेकिन मेरे पीछे रह। यह सब गलत ही है न! यह कितना ज़्यादा कच्चा डेवेलपमेन्ट है! मुझे बहुत चीढ़ चढ़ती थी कि ये किस तरह के लोग हैं! बेटा आगे बढ़ा तो आपको आनंद होना चाहिए न! परंतु अब, इस जमाने में लोगों के मन अच्छे हैं इतना मैंने देखा है। बेटा आगे बढ़े इन्हें वह पसंद है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह तो पहले पढ़ाई कम थी न, इसलिए ऐसा रहा होगा।

दादाश्री : नहीं, नहीं। और वे लोग क्या कहते थे? आप पढ़े हैं परंतु हम गढ़े हैं, फिर हमारे सामने बातें बड़ी करते थे? गढ़ाई हमारी थी। हालांकि वे लोग गढ़ाई में गलत नहीं थे, सही थे। यह सब डेवेलपमेन्ट कच्चा था। इन अंग्रेजों के आने के बाद अपने लोगों की बुद्धि डेवेलप हो गई हैं। यह पढ़ाई बढ़ी उसके कारण डेवेलप हुआ। गलत दुराग्रह और गलत धमाचौकड़ी सब छूट गए। उससे बहुत अच्छा हो गया। पहले तो कोई किसी को आगे ही बढ़ने नहीं देता था। इसलिए मैंने तो अपने भतीजों से कह दिया था कि, 'आप मेरी हेल्प से आगे आओ, तो मुझे हर्ज़ नहीं है और आगे आने के बाद आपके सींग लेकर मुझे सामने आकर मारना और मुझे मारोगे तब मुझे ऐसा लगेगा कि यह समझदार है। परंतु आप मुझसे आगे बढ़ना।' जबकि अपने लोग तो पीछे गिराने का ही मौका ढूँढते रहते हैं। मैंने क्या कहा था कि, 'आई विल हेल्प यू' (मैं आपकी मदद करूँगा)। मैंने ज़िंदगी भर ऐसा ही रखा था।

बच्चों के लिए अच्छी भावना ही करते रहो न! वे सारे संयोग आ मिलेंगे। नहीं तो इन बच्चों में कोई सुधार होने वाला नहीं है। बच्चे सुधरेंगे, लेकिन उन्हें अपने आप कुदरत सुधारेगी। बच्चे बहुत अच्छे हैं। किसी काल में नहीं थे ऐसे बच्चे हैं अभी!

कौन से गुण होंगे तो मैं ऐसा कहता हूँ किसी भी काल में नहीं थे ऐसे? किसी प्रकार का बेचारों में तिरस्कार नहीं है, कुछ भी नहीं है। सिर्फ मोही हैं, भटकते रहते हैं सिनेमा में और सभी जगह। जबकि पहले के जमाने में तो तिरस्कार इतने अधिक थे कि ब्राह्मण का बेटा दूसरों को छूए तक नहीं। है अभी ऐसी माथापच्ची?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ नहीं है, ज़रा सा भी नहीं।

दादाश्री : वह माल सब साफ हो गया और लोभ भी नहीं है, मान की भी पड़ी नहीं है। जबकि अब तक तो सारा झूठा माल था। मानी-क्रोधी-लोभी! जबकि ये तो बेचारे मोही जीव जैसे हैं!

बाहर नगाड़े बजें, उसमें हमें क्या?

प्रश्नकर्ता : दादा, नयी पीढ़ी को ऐसा सब अच्छा लगता है, वहाँ फिर कैसे एडजस्ट होना चाहिए?

दादाश्री : एक व्यक्ति मुझसे पूछ रहा था, मामा की *पोल* में। कहता है, 'मेरे सामने यहाँ गरबा होता है न, तो मेरे वहाँ तो रात को दो बजे तक ऐसा लाउड स्पीकर चलता है न, उससे पूरी रात मैं तो उकता जाता हूँ।' तब मैंने कहा, 'दो बजे तक लाउड स्पीकर चलता है, उसके बाद? तब कहने लगा, 'उसके बाद उसके प्रतिस्पंदन आते रहते हैं। तो पूरी रात मेरी ऐसे ही बीत जाती है!' तब मुझसे वह पूछने आया, 'आपको कुछ नहीं होता?' मैंने कहा, 'नहीं, मेरा तो उसमें, उस तरफ ध्यान ही नहीं जाता न! बाहर नगाड़े बजते हों या बाजे बजते हों या गरबा गाते हों, मुझे क्या लेना-देना उससे?'

प्रश्नकर्ता : सही है, दादा।

दादाश्री : तो कहने लगा, 'इतना ज़्यादा ध्यान अलग रहता है? मुझे लगता है कि कान में ज़रा बहरापन होगा आपको।' मैंने कहा, 'नहीं, वह इतना ज़्यादा बहरापन नहीं है, यह सब सुनाई तो देता है।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, लाउड स्पीकर तो सुनाई देता है न!

दादाश्री : पर जिसका उस तरफ ध्यान ही नहीं है, उस पर क्या असर होगा? इसलिए मैं कहता था, कि 'मेरे यहाँ लगाओ, भाई।' वे सभी उकता जाएँगे। हीरा बा को झंझट नहीं थी ऐसी-वैसी, उनका काम सरल था। वे क्या कहती थीं? बाहर बज रहा हो, उससे हमें क्या? लोग उनके घर में कुछ भी बजाए, हम कैसे बोल सकते हैं? यानी वे सरल थीं जबकि मैं सरल नहीं था, परंतु मेरा तो उसमें ध्यान ही नहीं जाता था न! वर्ना मेरा दिमाग खराब हो जाता फिर! हम सरल-वरल नहीं थे हीरा बा जैसे। किसी के घर पर बजाया क्यों? हमारा दिमाग इस तरह हमें परेशान करता था! वह नहीं पुसाता। पर हमारा ध्यान उस तरफ नहीं जाता था न! उसकी कोई कीमत ही नहीं रही इसलिए चिढ़ भी नहीं होती और कुछ भी नहीं। जबकि वह व्यक्ति कहता था, कि 'दो बजे तक तो खुद को सुनाई देता है और उसमें ही मेरा दम निकल जाता है।' तब मैंने कहा, 'फिर आराम से सो जाते थे तो क्या हर्ज़ था, इस तरफ करवट बदलकर?'

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तब कहने लगा, 'उसके बाद पूरी रात उसके प्रतिस्पंदन आते रहते हैं।' अब, इसका क्या उपाय कर सकते हैं? इसलिए मैं समझ गया कि जगत् कितना ज़्यादा परेशान हो जाता है, इन बाहर की चीज़ों, संयोगों से। परेशान हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, संयोगों से परेशान हो जाता है।

दादाश्री : अभी पुलिस वाला तो आया नहीं। पुलिस का संयोग आए तब क्या होगा फिर? पुलिस वाला हथकड़ी लेकर आए तब क्या होगा?

बिना बरकत वाले ही सुधरेंगे

प्रश्नकर्ता : इस (जनरेशन के) लड़कें ही बहुत बड़ी समस्या हैं।

दादाश्री : समस्या बड़ी है, जबरदस्त है। परंतु वह समस्या सुधरें ऐसी है। इस काल में ही ऐसे लड़के हैं कि जिनमें बिल्कुल बरकत ही नहीं है और बरकत न हो तभी सुधरते हैं। बरकत वाले नहीं सुधरते। बरकत वाले तो उनमें, अपने स्वार्थ के पक्के होते हैं, साथ में तिरस्कार होता है, अन्य सब होता है। इसलिए पूरा हिन्दुस्तान बिगड़ गया न! उसके बजाय बिना बरकत का माल अच्छा! मान की पड़ी नहीं है, किसी तरह की कुछ पड़ी नहीं है।

और माँ को 'मौसी' कहें, ऐसे आजकल के लोग हैं! माँ जा रही हों न, तो 'मौसी, मौसी' कहेंगे! अरे, तेरी माँ है यह तो! अरे, कुछ लोग तो पत्नी जा रही हो न तो कहेंगे, 'माँ, रुको, रुको'। पीछे से उनकी साड़ी वैसी दिखती हो न, तो पत्नी को 'माँ' कहते हैं!

यानी बिल्कुल बिना बरकत का! मोह में पड़ा हुआ! ज़्यादा मोही हो गए हैं न! इसलिए मोह में पड़ा हुआ माल बिना बरकत का होता है। हर चीज़ में मोह, हर चीज़ में मोह! आजकल के लड़कों में कुछ बरकत नहीं है। रास्ते में सुलेमान ने उसकी बहन को पकड़ लिया हो न, तो 'अरे

सुलेमान, मेरी बहन है, बहन है' करेगा। पहले के लड़के रहते तो क्या करते? सुलेमान का गला पकड़ लें ऐसे थे। और आजकल ये लोग तो बेचारे 'मेरी बहन है, मेरी बहन है, छोड़ दो'। ऐसा सब ढ़ीला खाता! लेकिन वे ढ़ीले हैं तो फायदेमंद होगा कि यह ज्ञान सभी जगह पहुँच जाएगा। अपना ज्ञान सब तक पहुँच जाएगा। ढ़ीले नहीं होते तो पहुँच ही नहीं पाता न!

हेल्दी जनरेशन - हेल्दी माइन्ड

प्रश्नकर्ता : बचपन से यदि यह ज्ञान सारा मिल गया होता, तो साफ ही सब कुछ, व्यवहार सारा साफ-सुथरा चलता।

दादाश्री : हाँ, अच्छा काम हो जाता।

प्रश्नकर्ता : अभी तो हम सभी बेशर्म जैसे हो गए हैं। यहाँ से बाहर जाते हैं तो फिर से मशीन चलने लगती है।

दादाश्री : हाँ, सही है, सही कह रहे हैं। बचपन में ऐसा (ज्ञान) मिल गया होता तो काम हो जाता न! देखो न, इन लड़कों को बचपन में मिल गया है, तो कितने समझदार हो गए! वर्ना, इस लड़के को तो, इसमें बरकत ही नहीं है! वह सोलह साल का लड़का आया न, उससे मैंने कहा, 'यह बिना बरकत का, तू किसलिए यहाँ आ गया है!' यही लड़का था। तब कहने लगा, 'जो कहो वह, आपके पल्ले पड़ा हूँ'।

पुराने जमाने में भी पति-पत्नी में अच्छे संबंध क्यों थे? वे पति ऐसे कुछ होशियार नहीं थे! समझदार नहीं थे। उनकी पत्नी अनपढ़ थी और पति को परमेश्वर मानती थी जबकि ये पढ़ी-लिखी ये क्या मानेंगी!

पढ़ाई नहीं थी, परंतु गढ़ाई थी उन दिनों। इन पढ़ी-लिखी स्त्रियों में गढ़ाई बिल्कुल नहीं है। लेकिन इन लड़कों में भी गढ़ाई नहीं है। आजकल के लड़के सभी बिना बरकत वाले कहलाते हैं। ऐसे भी बरकत नहीं वैसे भी बरकत नहीं। परंतु उससे फायदा क्या हुआ? एक प्रोफेसर ने मुझसे पूछा कि, 'ये आपके आप्तपुत्र सभी इतनी छोटी उम्र के क्यों हैं, बड़ी उम्र के क्यों नहीं हैं?' मैंने कहा, 'बड़ी उम्र वाले मन के चोर थे। आज की ये जनरेशन हेल्दी माइन्ड की है।' हेल्दी माइन्ड कैसे? ममता ही नहीं। भान भीतर होगा तो ममता होगी न! जिसे भान हो उसे तो ममता होती है! ममता ही नहीं जबकि पहले तो, मेरी उम्र में तो लड़के होते थे न, वह पाँच साल का छोटा बच्चा हो न, तो भी आपके आठ आने यदि गिर गए हों, तो उस पर पैर रखकर बातें करता था। चोर एकदम, हमारे समय में बिल्कुल चोर ही थे लोग। हमारा जन्म हुआ तब हेल्दी माइन्ड नहीं था। मेरा जन्म हुआ तब तो चोर माइन्ड वाली जनरेशन थी, 78 साल पहले तो।

अब, अभी के बच्चों में बिल्कुल बरकत ही नहीं है। इसलिए ये (चोरी का) गुण भी नहीं है उनमें। ममता ही चली गई न! इसलिए मैंने कहा, 'हेल्दी माइन्ड वाले है। इन्हें मोड़ने वाला चाहिए। इन बच्चों को मोड़ने वाला चाहिए। हमारे हाथों मुड़ जाएँ तो फिर ऑलराइट हो जाएँगे, भगवान हो जाएँगे'।

प्रश्नकर्ता : हेल्दी माइन्ड वाला वह जमाना किस साल से कह रहे हैं? हेल्दी माइन्ड वाले किस साल के जन्म के बाद माने जाते हैं?

दादाश्री : अभी के ये जो लड़के-लड़कियाँ हैं, वे पच्चीस साल के अंदर के हैं, वे सभी हेल्दी माइन्ड वाले हैं।

प्रश्नकर्ता : उन्हें फिज़िकल फिटनेस का सर्टिफिकेट देना हो तो कैसे दें?

दादाश्री : हेल्दी माइन्ड के लोगों को अन्हेल्दी लोगों के साथ रहना पड़ता है। इसलिए फिज़िकल फिटनेस होती ही नहीं, बेचारों की!

यानी यह इनका माइन्ड हेल्दी है, यह मेरी खोज़बीन है। हेल्दी माइन्ड वाली जनरेशन किसी समय में हुई हो तो वह इस काल में हुई हैं। हेल्दी होती-होती आयी हैं। हमारे समय से हेल्दी होती-होती आयी लगती हैं, ममता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : आजकल के लड़कों में मेरा-तेरा नहीं है परंतु मेरा-मेरा है, ऐसा है।

दादाश्री : भले वह ऐसा लगे, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है बेचारों में। यह मेरा कितना खराब दिखेगा ऐसा कुछ नहीं। फिर लूँगी पहनकर भी घूमते रहते हैं। यानी बरकत नहीं है इतना अच्छा है। इन लोगों में बरकत आने में देर नहीं लगेगी, संस्कार आने में देर नहीं लगेगी। बहुत हेल्दी माइन्ड वाले हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह से पहचानता हूँ।

हेल्दी माइन्ड क्यों कहता हूँ मैं, कि उसे जैसा सिखाए वैसे तैयार हो जाते हैं! पुराने रोग नहीं है। भूख लगे तब खाना ढूँढेंगे, अन्य कुछ नहीं। ममता नहीं इसलिए उसके पिता अपना घर बेचने के लिए घूमते हो न, तो भीतर उसे पड़ी नहीं होती। जबकि पुराने जमाने में तो पिता से कहते थे, 'बेचना नहीं है मुझे'। अभी तो हेल्दी माइन्ड वाले, ममता नहीं है। इसलिए जैसा गढ़ना हो वैसा हो सकता है। अत: उस प्रोफेसर ने लिखा कि यह तो कुछ गज़ब की खोज़बीन है! हेल्दी माइन्ड है!

तो यह कुदरत का उपकार है कि ये जनरेशन एकदम हेल्दी माइन्ड वाली हुई है! हेल्दी माइन्ड की जनरेशन कभी नहीं होती है और होती है तब वर्ल्ड का कल्याण करती है। इन्हें मार्गदर्शन देने वाला चाहिए।

समय अनुसार जगत् बदलता रहता है

ये बड़े-बूढ़े पुराने जमाने को ही पकड़े रहते हैं। अरे, जमाने के अनुसार कर, नहीं तो मार खाकर मर जाएगा! जमाने के अनुसार एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए।

संसार का अर्थ ही समसरण मार्ग, इसलिए निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है। जगत् बदलता ही रहता है, निरंतर बदलता ही रहता है। एक ही प्रकार का रहे न, तो मनुष्य को अच्छा ही नहीं लगेगा। जबकि मनुष्य का स्वभाव कैसा है, कि बचपन में देखा हो वैसा का वैसा ही इन लड़कों से कहेंगे, 'तुम्हें ऐसा करना है'। अरे, रहने दे। समय बदल गया, बात बदल गई। उन दिनों होटलें भी नहीं थीं और कुछ भी नहीं था। अभी होटलें हैं, अभी नहीं चलेंगे तो कब चलेंगे? समय अनुसार बदलना चाहिए सब कुछ। समय अनुसार यह जगत् बदलता ही रहता है और उसके बाद फिर से वापस उसी जगह पर आता है और अब वैसे ही लहँगे और सब वापस वैसा ही पहनेंगे।

प्रश्नकर्ता : यह शुरूआत हो गई।

दादाश्री : हाँ, हो जाएगी। वे चूड़ियाँ वगैरह वापस फिर से वैसा का वैसा ही पहनेंगी। ये चूड़ियाँ चली गयी थीं न, चूड़ियाँ..

प्रश्नकर्ता : हाँ, वे आ गई वापस।

दादाश्री : वे अब आने लगी हैं वापस, देखो आने लगी हैं। हाँ, वह सब जितना पहले हमने देखा था न, वह सब वापस आने लगा है। जिनके प्रति चिढ़ होती थी, चूड़ी देखते थे और चिढ़ होती थी। वे अभी रौब से दिखाई देती हैं। क्योंकि कोई भी चीज़ जब नहीं होती न, तभी उस चीज़ की कीमत होती है और बहुत अधिक मात्रा में बढ़ जाए, तब उस चीज़ के प्रति चिढ़ होने लगती है, ऐसा इस दुनिया का रिवाज़ है सारा!

यानी समय अनुसार सब कुछ बदलता ही रहता है और इसलिए ही नया-नया लगता है, इसीलिए जी पाते हैं। वर्ना जी नहीं पाते। पुराना हो जाए तो अच्छा लगेगा? वही की वही दशा हो तो अच्छा नहीं लगता मनुष्य को।

हमारे समय में, हम कभी होटल में गए हों तो घर पर माँ-बाप जमकर खबर लेते थे क्योंकि माँ-बाप ने (होटल) देखी ही नहीं थी। वे अमुक जमाने में बड़े हुए थे। उनमें कुछ प्रकार के पर्याय बन गए थे। यह उन्हें अच्छा नहीं लगता था जबकि बच्चों को अच्छा लगता है। तो मतभेद, ये संधिस्थान ही सारे बनते रहते हैं। अनंत जन्मों से ही, इस जन्म में ही ऐसा हुआ है ऐसा नहीं है, पहले से ही यही का यही चलता आया है। नये-पुराने का संधिस्थान चलता ही रहता है, थोड़े समय झगड़ा रहता है, थोड़े समय अच्छा रहता है। यानी घर में बीस व्यक्ति हों, वे सभी घर के दादाजी के कहे अनुसार चलते हैं। ऐसा थोड़े समय तक रहता है। फिर सब अपने-अपने तरीक़े से चलें, ऐसा जमाना आता है।

मॉडर्न होकर लिए एडजस्टमेन्ट

बेटा पुरानी बातें स्वीकार करने को तैयार नहीं इसलिए आपको ये सब परेशानियाँ हुई हैं। बाप को मैं मॉडर्न (आधुनिक) होने के लिए कहता हूँ, तो वे हो नहीं पाते। वे कैसे हो सकते हैं? मॉडर्न होना वह कोई आसान बात नहीं है।

क्योंकि हर एक युग में हमेशा ऐसा भेद पड़ जाता है। कलियुग जब बदलता है वहाँ उस समय अगर मूर्ख हो तो वह पकड़कर रखता है। मैं तो पहले से ही मॉडर्न हो गया था क्योंकि वह युग बदल जाता है। इस बीच लड़के तो इतने लंबे बाल और इस तरह दाढ़ी-मूछें रखते थे उनकी लोगों ने टीका करना शुरू कर दी, मैंने कहा, 'मत करना'। इन लड़कों का यह बुद्धिपूर्वक नहीं होता। यह तो वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ। अपने आप ही पहेली बन गया है यह और गुह्य है पहेली!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी भी धन्य घड़ी है कि पुराने और नये जमाने के, दोनों प्रकार के माल देखने को मिले, पिछला वह और यह नया।

दादाश्री : हाँ, सबकुछ। इसलिए मैं तो फिर ऐसा हूँ न, मॉडर्न स्वभाव वाला आदमी! अभी मिलता रहता हूँ इन सभी से, तो उनके साथ आइस्क्रीम वगैरह भी खाता हूँ। उन्हें डाँटता नहीं, आइस्क्रीम खा रहे हों तो, कि 'मत, खाओ भाई'। जमाना बदल गया तो खा रहे हों, वर्ना कहाँ से खाते, थी ही कहाँ? पहले आइस्क्रीम देखी ही कहाँ थी भला?

मैंने तो हिसाब निकाला। अठारह साल की मेरी उम्र थी, तब हम पिछली पीढ़ी को धिक्कारते थे कि आप ऐसे लोग, ये पुराने विचार के और ऐसा और वैसा और... धिक्कारते थे उनके विचार और वह सब देखकर। यानी उनका मज़ाक उड़ाते और बाकी सब करते थे। इसलिए उस पर से ही मैं समझ गया कि यह नयी पीढ़ी हमें ऐसा ही कहेगी।

यानी यह हमारी भूल थी, उन्हें धिक्कारते थे वह। धिक्कारना नहीं चाहिए उस समय। हमें एडजस्ट हो जाना चाहिए।

नेचर के प्रवाह में पुराने का नया, नये का पुराना

अत: नयी पीढ़ी वालों ने जैसा कहा न, वैसा उसमें मैं एडजस्ट हो गया।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उस समय के प्रवाह में चलना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, उसके साथ-साथ चलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : प्रवाह के विरुद्ध चल ही नहीं सकते न! आप जाआगे तब भी डूब जाओगे।

दादाश्री : नहीं, उसे कोई सुधार ही नहीं सकता। खुद सुधरा नहीं, वह किसी को क्या सुधार सकता है? ये तो सुधारने के लिए कहते हैं, 'सिनेमा (देखने) मत जाओ, सिनेमा देखने मत जाओ'। अरे, तुम अब बुढ़े हो गए हों तो तुम्हें मोह नहीं है, परंतु क्या इसे मोह नहीं है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ है।

दादाश्री : तुम बुढ़े हो गए, तो मोह रहा होगा सिनेमा का? इसलिए मैं तो लड़कों से कहता था, 'अरे, आपको शर्म आती हो तो मैं साथ में देखने आऊँगा'। उससे लड़के खुश हो जाते थे कि अपने मत से सहमत हैं।

प्रश्नकर्ता : बल्कि हम उसे कहें वैसा करे और खुश रहे। जबकि 'मना' करें तो उनका मुँह पागलों जैसा, फिर वैसा हमारा होगा। उसके बजाय चलने दो न! एडजस्ट हो जाओ न, भाई!

दादाश्री : जमाने के विरुद्ध, जो प्रवाह के विरुद्ध चलें थे न, उन सभी को फेंक दिया गया। यह प्रवाह है, प्रवाह! यह मेरी खोज़बीन है, कि प्रवाह के विरुद्ध जो चले थे, उन सभी को फेंक दिया गया इसलिए यदि प्रवाह को मान (सम्मान) नहीं दोगे तो मारे जाएँगे।

यह तो कुदरती प्रवाह है। ये मनुष्य नहीं करते यह सब, नेचर कर रही है यह सब। नेचर (कुदरत) निरंतर गोल घूमती ही रहती है, गोल घूमती ही रहती है। यह सब कुछ राउन्ड (क्रम) में है। ये युग, वे भी राउन्ड हैं। पिछला सब भूला देती है और फिर ये नया-नया उत्पन्न होता है। पुराने को नया करती है और नये को फिर पुराना करती है। पुराने को नया करती है। ये सारी अवस्थाएँ उत्पन्न हो गई हैं। उससे यह पूरा जगत् दिखाई देता है! अवस्थाएँ सारी 'रिलेटिव' हैं, विनाशी हैं, निरंतर परिवर्तनशील हैं! इस तरह (जनरेशन के) ये चक्र घूमते रहते हैं, काल अनुसार सब होता रहता है, उसमें किसी का भी दोष नहीं है।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

हरिद्वार में नेशनल हिन्दी शिविर - वर्ष 2025

28 मई से 1 जून - सत्संग और **29 मई** (गुरु) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

स्थल : पतंजलि वैलनेस सेन्टर, पतंजलि योगपीठ - 2, **पंचायांपुर, हरिद्वार** - 249405. **संपर्क :** 9924348880

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए आप्तपुत्रों द्वारा ब्रह्मचर्य शिविर दि. 6-8 जून 2025

मोबाइल-इन्टरनेट, विषय-विकार के कुसंग से कैसे छुटकारा पाएं, उसकी सच्ची समझ प्राप्त करने हेतु यह शिविर आयोजित की गई है। जो युवक इस शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र 21 से 30 के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम 1 साल हुआ होना जरूरी है। आपका रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए ईस नंबर 9033501571 पर संपर्क करें।

अडालज : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 24 मार्च 2025

पूज्यश्री का जर्मनी सत्संग प्रवास : ता. 28 मार्च से 1 अप्रैल 2025

मई 2025
वर्ष-20 अंक-7
अखंड क्रमांक - 235

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

आज के युग अनुसार हमें भी मोर्डन होना पड़ता है

बेटा पुरानी बातें स्वीकार करने को तैयार नहीं इसलिए आपको ये सब परेशानियाँ हुई हैं। बाप को मैं मॉडर्न (आधुनिक) होने के लिए कहता हूँ, तो वे हो नहीं पाते। वे कैसे हो सकते हैं? मॉडर्न होना वह कोई आसान बात नहीं है। क्योंकि हर एक युग में हमेशा ऐसा भेद पड़ जाता है। कलियुग जब बदलता है वहाँ उस समय अगर मूर्ख हो तो वह पकड़कर रखता है। मैं तो पहले से ही मॉडर्न हो गया था क्योंकि वह युग बदल जाता है। इस बीच लड़के तो इतने लंबे बाल और इस तरह दाढ़ी-मूछें रखते थे उनकी लोगों ने टीका करना शुरू कर दी, मैंने कहा, 'मत करना'। इन लड़कों का यह बुद्धिपूर्वक नहीं होता। यह तो वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ! आपको यह अनुकूल न आए न, तो एडजस्ट हो जाओ लेकिन इसमें आप विरोधी मत बनो।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.